* श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय *

****

प्रकाशक

श्रीनिम्बार्कपरिषद्

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी

गढ़ के सामने, कलवाड़ा,

जयपुर राजस्थान - 302037

www.nimbarkparishad.com

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीनिम्बार्काब्द 5115 5116,
वि० सं० 2077 प्रमादी नाम संवत्सर,
ईस्वी 2020 – 2021
का

कपालवेध मतानुसार

* श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय *

संपादक
डॉ श्रीकन्हैया लाल झा
प्राचार्य श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय, श्रीवृन्दवान

प्रकाशन तिथि
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
संवत 2077 वि०

स्थान
जयपुर

शुभेच्छा

मनुष्य प्रायः अपने दैनिक कार्य नियमित करता है, निन्द्रा और भोजन में तो वह कड़ा नियम रखता हैं, किन्तु भजन में उसकी नियमितता ना जाने कहाँ तिरोहित हो जाती है भजन किये बिना खाने वाला पाप खाता है। मनुष्य जितनी देखभाल अपने कपड़ों की करता हैं यदि उतनी ही देखभाल अपने मन की भी करे तो वह मलिन नहीं हो पाये। सत्कर्म में नियमितता होनी चाहिये नियमित सत्कर्म करने वाला ही साधक है। व्रतोपवास रुपी सत्कर्म सभी को निरन्तर अवश्य ही करना चाहिये।
व्रतोपवास नियत पर्व तथा नियत समय पर किये हुए ही फलीभूत होते हैं। व्रतोपवास के नियम तथा विधि का निर्णय शास्त्रों में वर्णित हैं किन्तु वह सभी साधकों को सहज उपलब्ध हो और वे अपने व्रतोपवास रुपी सत्कर्मों का सरलता से पालन कर सकें इसीको ध्यान में रखते हुए श्रीनिम्बार्क परिषद् जयपुर राजस्थान द्वारा प्रकाशित श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय सम्प्रदाय के सभी सुधी सज्जन साधु सन्तों को अवश्य ही लाभ पहुँचायेगा इस विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। श्रीनिम्बार्क परिषद् के इस पवित्र कार्य के लिए मैं अपनी अनादि वैदिक परम्परा के प्रवर्तक आचार्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् के चरण कमलों में आशीर्वाद और शुभेच्छा की प्रार्थना करता हूँ। हमारे पूज्य श्रीवैकुण्ठ प्राप्त श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज जी के चरण कमलों में बारम्बार दण्डवत नमन करता हुआ श्रीसर्वेश्वर भगवान् से भी मंगल प्रार्थना करता हूँ।

श्रीवृन्दावन बिहारी दास जी काठिया बाबा
(सुखचर कोलकाता बंगाल द्वारा ऑडियो
क्लिप के रूप में प्राप्त आशीर्वाद)

****

"धावन् निमिल्य वा नेत्रे , न स्खलेन्न पते देहि ॥"

अर्थात वैष्णवधर्म भागवतधर्म पर चलने वाले का कभी भी, किसी भी देश, काल, परिस्थिति में पतन नहीं होता है।

सहज जिज्ञासा होती हैं वैष्णव धर्म क्या हैं ? श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीभगवतपुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज अपने ग्रन्थ "वेदान्तरत्नमञ्जूषा" के तृतीय कोष्ठ में सर्व शास्त्र प्रामाण्य स्वरुप वैष्णवलक्षण बताते हुये निबद्ध करतें हैं कि--

> "वैष्णव धर्म हैं करुणावरुणालय भगवान श्रीवासुदेव के श्रीचरणों में आत्मभार निवेदित कर भगवदाज्ञा अनुरूप जीवन व्यतीत करना। श्रुति - स्मृति एवं सदाचार की परम्परा से चली आई भगवदाज्ञा का जो स्वेच्छया से उल्लंघन कर कूटयुक्तियों से उसे उचित बताते हैं वे मूर्ख-दुःशील-नराधम नरक को जाते हैं।"

अतः श्रुति – स्मृति - सदाचार की भगवदाज्ञा का सम्यक परिपालन हो इसके लिए श्रीनिम्बार्क परिषद् यह ने "श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय" प्रकाशित करके स्तुत्य कार्य किया हैं। इसमें सम्मिलित विशिष्ट विवरणों से यह अत्यन्त संग्रहणीय बन पड़ा है। श्रीसर्वेश्वर प्रभु श्रीनिम्बार्क परिषद् को सामर्थ्य प्रदान करें की यह सम्प्रदाय के सिद्धान्त परक साहित्य को सहज सुबोध रूप में वैष्णव जगत में प्रस्तुत करें।

महन्त श्रीबनवारी शरण
श्रीगोपालजी का मन्दिर, जूसरी मकराना
प्रन्यासी अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ

नियमेन यदानन्दो जगाद्भासयतेऽखिलम्।
तमहं नियमानान्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम्॥

अनादि वैदिक सनातन वैष्णव संस्कृति में व्रतादि नियमों की प्राचीन परम्परा रही है। जो अद्यतन अविच्छिन्न रूप से परिपालित है। शास्त्रोक्त व्रतादि का शास्त्रोक्त रीती से परिपालन ही श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में इष्ट है। आद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य प्रभु ने ब्रह्मसूत्रादि ग्रन्थों के भाष्य तथा सदाचार प्रकाशआदि ग्रन्थों में इस शास्त्रविधि का वर्णन विशद रूप से किया है, जिसका उल्लेख परवर्ती आचार्यों ने अपने अपने ग्रन्थों में किया है। श्रीनिम्बार्काचार्य ने शास्त्र प्रतिपादित व्रतादि में कपाल वेध अर्थात् अर्धरात्र पर तिथि का उदयकाल स्वीकार किया है यही सम्प्रदाय में विशिष्ट रूप से मान्य है। इस कपालवेध के अनुपालनानुसार ही समस्त एकादशी-महाद्वादशी व्रतोपवास, मासोपवास एवं भगवद्भागवज्जयन्ति पाटोत्सवादि सम्पन्न हो सकें इसके लिए श्रीऔदुम्बर संहिता, स्वधर्मामृत सिन्धु, वैष्णवधर्म सुरद्रुम मञ्जरी आदि ग्रन्थों का निर्माण साम्प्रदायिक विद्वानों ने किया है जिनके अनुसार ही सम्प्रदाय के सभी स्थानों तथा उनसे सम्बद्ध वैष्णव सभी व्रतोपवास सम्पन्न करते आये हैं।

विभिन्न स्थानों से इस हेतु कपाल वेधानुसार तिथिपत्रक भी प्रकाशित किये जाते हैं। विशेषतया श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से प्रकाशित तिथि पत्रक को ही सर्वांशतया प्रमाण मानकर अधिकाँश स्थानों से उसी के अनुसार अपने अपने तिथि पत्रक प्रकाशित होते रहे है। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज प्रत्येक व्रतोपवास कपाल वेधानुसार ही निर्णीत हो इसका अत्यन्त कठोरता से पालन करवाते थे। विद्वत जनों द्वारा प्रस्तुत तिथिपत्रक को स्वयं निरीक्षण करके प्रकाशन सम्बन्धी आज्ञा प्रदान करते थे।

परन्तु श्री श्रीजी महाराज के भगवद्धाम प्रवेश के पश्चात आचार्यपीठ की प्रत्येक मर्यादा में विचलन लक्षित हुआ हैं उन्ही में से एक विचलन सामने आया है कि संप्रदाय के इस कपालवेध सिद्धान्त का हनन करते हुए भगवद्जयंतियों की तिथियों में व्यतिक्रम किया जा रहा है। विगत वर्षो में श्रीराम नवमी, श्रीनृसिंह चतुर्दशी, आदि कई उत्सवों को कपालवेध मत के विरुद्ध मनाया गया जो शास्त्र विरुद्ध होने से निष्फल रहा।

अतः इस दोष के परिहारार्थ "श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय" का प्रकाशन श्रीनिम्बार्कपरिषद् द्वारा किया जा रहा है। इस तिथि पत्रक में जयपुर के सूर्योदय से तिथियों के मान की सारिणी घटी-पल एवं घण्टा - मिनट सहित दी जा रही हैं तथा तद्तिथि मानानुसार व्रतोत्सव अंकित किये गये हैं। श्रीऔदुम्बर संहिता, स्वधर्मामृत सिन्धु, वैष्णवधर्म सुरद्रुम मञ्जरी , श्रीनिम्बार्क व्रत निर्णय आदि ग्रन्थों में वर्णित प्रत्येक मास के कृत्यों को संक्षिप्त रूप से दिया गया है, यह विशेषता प्रत्येक वैष्णव के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगी। इस महनीय कार्य हेतु श्रीनिम्बार्कपरिषद् साधुवाद की पात्र है, श्रीसर्वेश्वर प्रभु संस्था को उत्तरोत्तर उन्नति प्रदान करे।

महन्त श्रीवृन्दावनदास शास्त्री
श्रीअलीमाधुरी कुटी, रमण रेती, श्रीवृन्दावन
महामन्त्री अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्क महासभा
प्रन्यासी अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ

सर्वज्ञो जगतः कर्ता भक्ताभीष्टप्रदो विभुः ।
यः केशवं नामामस्तं शरण्यं भक्तवत्सलम् ॥
अगाधबोधमाचार्य्यं निम्बादित्यं जगद्गुरुम् ।
ब्रह्मविद्योपदेष्टारं सततं प्रणमाम्यहम् ॥

***

"**वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः ।**" [भा० 6/1/40]

वेद प्रतिपादित नियमों के पालन करने का नाम धर्म और उसके विपरीताचरण का नाम ही अधर्म है। धर्माचरण के निर्णय हेतु "तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ" इस भगवद्वाक्यानुसार एक मात्र शब्द (शास्त्र) ही प्रमाण है।
व्रत उपवास भी धर्माचरण का ही एक प्रधान अंग है। इसके पालन करने से प्रायः धर्म के अन्य समस्त लक्षणों का पालन हो जाता है। विशिष्ट पर्व दिवस पर विशिष्ट नियमों के पालन का नाम व्रतोपवास है। पापों से उपावृत्त (पृथक्) होकर अर्थात् समस्त भोगों से रहित होकर, गुणों के साथ वास करने का नाम उपवास है। इसी भावनानुसार भगवान् की सेवा आराधना, एकादशी, महाद्वादशी, श्रीरामनवमी – जन्माष्टमी आदि महोत्सवों का विधान श्रीआद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य प्रभु ने अपने सदाचारप्रकाश नामक ग्रन्थ में किया है और उसी का आश्रय लेकर श्रीऔदुम्बर संहिता, स्वधर्मामृत सिन्धु, वैष्णवधर्म सुरद्रुम मञ्जरी , श्रीनिम्बार्क व्रत निर्णय आदि ग्रन्थों का निर्माण साम्प्रदायिक विद्वानों ने किया है।

जैसे देवताओं में विष्णु प्रधान हैं, वैसे ही व्रतों में भी एकादशी व्रत प्रधान है। एकादशी और भगवत् महोत्सव एक व्रत में गिने जाते हैं। जब तक एकादशी और भगवत् महोत्सव हों तब तक उपवास रखना चाहिये। दशमी को असुरों तथा एकादशी में देवताओं की उत्पत्ति हुई है, दशमी में भी अर्धरात्र का समय असुरों की उत्पत्ति का कारण है। अतः एकादशी में दशमी का वेध निषिद्ध माना जाता है। स्पर्श, संग, शल्य और वेध इन चतुर्विध वेधों में प्रथम स्पर्श वेध को ही अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य जी ने स्वीकार किया है। आपने प्रत्येक एकादशी एवं भगवद्भागवज्जयन्तियों में तिथि का उदय काल अर्धरात्र अर्थात् 45 घटी पर ही माना है। अर्धभाग का नाम है कपाल। रात्रि के अर्द्धभाग के वेध को स्वीकार करने से इस स्पर्श वेध का ही नाम कपाल वेध है।

उदय व्यापिनी ग्राह्या कुले तिथिरुपोषणे।
निम्बार्को भगवान्येषा वाञ्छितार्थ प्रदायकः॥

जिस कुल में भगवान् श्रीनिम्बार्क वाञ्छित फल दाता (उपास्य) हों उस सम्प्रदाय में व्रत उपवास आदि धर्म कार्यों में उदय व्यापिनी तिथि का ग्रहण करना चाहिये। उदय व्यापिनी का तात्पर्य है --तिथि का उदय, वह अर्धरात्रि के अनन्तर होता है। आपके मत में दशमी यदि पल मात्र भी 45 घटी से अधिक हो तो अगली तिथि एकादशी का स्पर्श अर्थात् वेध कर लेती हैं तो उस एकादशी का त्याग करके वह उपवास द्वादशी में करना चाहिये।

अर्धरात्रमति क्रम्य दशमी दृश्यते यदि।
तदाह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ॥
[कूर्मपुराण]

जो अर्द्धरात्र का अतिक्रमण (उल्लंघन) कर अर्थात् 45 घटी के उपरान्त दशमी दीख पड़े तो निश्चय ही उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी में व्रत करे।

प्रायः तिथियाँ दो प्रकार की होती हैं - शुद्धा और विद्धा, शुद्ध तिथि वह कहलाती है जिसमें पूर्व तिथि का सम्पर्क न हो, जिसमें पूर्वापर तिथियों का सम्पर्क हो वह विद्धा कहलाती है। विद्धा तिथि भी दो प्रकार की होती हैं, एक पूर्व विद्धा, दूसरी पर विद्धा, वैष्णव धर्म शास्त्रकारों ने पूर्व विद्धा तिथि को त्यागने का आदेश दिया है, और उसे वैष्णवों का लक्षण (स्वरूप) माना है--

"पूर्वविद्धतिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्"

इस नारद पंचरात्र के प्रमाणानुसार पूर्व विद्धा तिथि का परित्याग ही वैष्णव का लक्षण है। अतः व्रतोपवासादि में पूर्वविद्धा तिथि छोड़ परविद्धा तिथि ही ग्राह्य है। 'स्वधर्मामृत सिन्धु, वैष्णव धर्म सुरद्रुम मञ्जरी , औदुम्बर संहिता' आदि ग्रन्थों में इसे विशद रूप में वर्णित किया गया हैं।

प्रायः कई एक स्थानों से अनेक पंचांग निकलते है अपने – अपने स्थान की गणना के अनुसार उनके तिथियों के घटीमान में भिन्नता रहती है। मान लीजिये एक पंचांग में दशमी तिथि का घटीमान 44 घटी है तो दूसरे पंचांग के अनुसार दशमी 44 घटी है, पहले के अनुसार से तो एकादशी दशमी विद्धा नहीं है, अतः एकादशी में व्रत उपवास होना चाहिये परन्तु दूसरे पंचांगानुसार जिसमें कि दशमी 46 घटी हैं उसके अनुसार से एकादशी दशमी विद्धा है, अतः एकादशी में व्रत न होकर द्वादशी में ही होना चाहिये। ऐसी स्थित में भावुक सज्जनों को यह सन्देह हो जाता है कि व्रत उपवास एकादशी में करना चाहिये या द्वादशी में। इस संदेह की निवृत्ति इस प्रकार कर लेना चाहिये कि क्षेत्र-प्रान्त में जो पंचांग प्रचलित हो अर्थात् वहाँ जिस पंचांग को अधिक लोग मानते हों उसी बहुमान्य पंचांगानुसार विद्धा अथवा शुद्धा एकादशी का निर्णय करना चाहिये -

बहुवाक्यविरोधेन संदेहो जायते यदा।
उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यांतु पारणम्॥

इस नारदजी के वचनानुसार बहुवाक्य विरोध होने पर द्वादशी में उपवास करके त्रयोदशी में पारणा करना चाहिये।

आठ-महाद्वादशी

उन्मीलिनी वञ्जुलिनी त्रिस्पर्शा पक्षवर्द्धिनी।
जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी॥
द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्वपापहरा द्विज॥ [ब्रह्मवर्त]

उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशिनी ये आठ महाद्वादशियां पुण्यप्रद हैं और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। इनका योग जानने का क्रम निम्नप्रकार से हैं -

1. जैसे एकादशी पूर्ण हो दूसरे दिन भी कुछ एकादशी हो, तो वह महाद्वादशी 'उन्मीलिनी' कहलाती है।

2. एकादशी तथा द्वादशी सम्पूर्ण हो और फिर त्रयोदशी को भी कुछ अवशिष्ट हो, तो वह महाद्वादशी 'वञ्जुलिनी' कही जाती है।

3. प्रातःकाल एकादशी हो फिर द्वादशी का क्षय होकर रात्रि शेष में त्रयोदशी हो, तो वह महाद्वादशी 'त्रिस्पर्शा' कहलाती है।

4. अमावस्या या पूर्णिमा तिथि यदि दो हो जाय तो वह महाद्वादशी 'पक्षवर्द्धिनी' नाम से कही जाती है।

5. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो तो वह 'जया' नाम महाद्वादशी होती है।

6. किसी भी मास के कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो वह 'विजया' नाम की महाद्वादशी कही जाती है।

7. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो, तो वह 'जयन्ती' नाम की महाद्वादशी कहलाती है।

8. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह 'पापनाशिनी' महाद्वादशी कहलाती है।

उपर्युक्त प्रथम चार महाद्वादशी तो तिथियों के योग से बनती है और शेष चार महाद्वादशी नक्षत्रों के योग से आती हैं, अतः इन आठों महाद्वादशियों में से किसी का भी योग आ जावे तो शुद्धा वेध रहित एकादशी को भी छोड़कर महाद्वादशी में व्रत करना चाहिये। यथा-

"शुद्धाप्येकादशी त्याज्या द्वादश्या समुपोषणम्"

ऐसा ब्रह्मवैवर्त और पद्मपुराणादि का वचन है। तथा वैष्णवधर्मसुरद्रुममन्जरी में आचार तिलक ग्रन्थ से ब्रह्मवैवर्तपुराण का वचन —

पर्वाच्युतजयावृद्धौ ईश दुर्गान्तकक्षये।
शुद्धाप्येकादशी त्याज्या द्वादश्यां समुपोषणम्॥

का उद्धरण देते हुए कहा गया है की पर्व नाम पूर्णिमा, एवं अमावस्या, अच्च्युत नाम द्वादशी, जया नाम त्रयोदशी इनमें से किसी एक की वृद्धि हो और ईश नाम अष्टमी, दुर्गा नाम नवमी, अन्तक नाम दशमी इनमें से किसी एक का क्षय हो तो शुद्धा एकादशी को छोड़कर द्वादशी में व्रत करें।

पारणा निर्णय – जब एकादशी पूर्वतिथि से विद्धा हो अथवा एकादशी बढ़ी हो; तब द्वादशी में व्रत और त्रयोदशी में पारणा करें। जब एकादशी विद्धा हो और दूसरे दिन बढ़ी नहीं हो तब शुद्ध द्वादशी में व्रत और त्रयोदशी में पारणा करना चाहिये। जब त्रयोदशी में द्वादशी दो घडी हो तब द्वादशी में ही पारणा करें द्वादशी का उल्लंघन ना करें। स्कन्द पुराण का वचन है – जब पारणा के दिन बहुत थोड़ी भी द्वादशी हो तब अरुणोदय के उषः काल में प्रातः मध्याहन काल के दोनों कर्म कर लें। यदि द्वादशी घडी भर भी ना हों तो त्रयोदशी में पारणा करना चाहिये।

श्रीभगवद्जयन्ती पाटोत्सवादि में भी व्रत उपवास रखना वैष्णवों का मुख्य कर्तव्य है। श्रीनिम्बार्क मतानुयायी वैष्णवों को इन जयन्तियों में भी यही कपाल वेध पालन करना चाहिये जैसे भाद्रपद

कृष्ण पक्ष की सप्तमी यदि 45 घटी से ऊपर हो, तो श्रीकृष्णजन्माष्टमी महोत्सव दूसरे दिन अष्टमी को न मानकर यह महोत्सव नवमी को मानना चाहिये और उसी दिन व्रत उपवास रखना चाहिये। कारण कि वह अष्टमी कपाल वेध मतानुसार सप्तमी विद्धा है अतः उसे छोड़कर नवमी को यह उत्सव करना चाहिये। भले ही अष्टमी के दिन बुधवार एवं रोहिणी नक्षत्र आदि- योग भी क्यों न पड़े हों पर सप्तमी विद्धा होने से उसे छोड़ कर नवमी ही मान्य है। इसी प्रकार अन्य तीनों जयन्तियाँ भी कपाल वेध मतानुसार यदि पूर्व तिथियों से विद्धा हों तो श्रीराम नवमी चैत्र शुक्ल दशमी को, श्रीनृसिंह जयन्ती वैशाख शु० पूर्णिमा को, श्रीवामन जयन्ती, भाद्रपद शु० त्रयोदशी को मानना चाहिये। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चाहिये।

इसके अतिरिक्त श्रीराधा जयन्ती, श्रीजानकी जयन्ती और श्रीआचार्य जयन्तियों में भी यही कपाल वेध मुख्य है। यही पूर्वाचार्य कथित विभिन्न ग्रन्थोक्त बारह मास के कृत्यों का वर्णन कपाल वेधानुसार समस्त निम्बार्कीय वैष्णवों की सुविधा हेतु यहाँ किया जा रहा है।

प्रथम प्रयास होने तथा वर्तमान में उपस्थित हुई वैश्विक महामारी संकट के कारण साधारण साज सज्जा से ही इसे प्रकाशित किया जा रहा हैं तथा उक्त परिस्थिति में अत्यन्त ध्यान रखते हुए भी कोई त्रुटी यदि रह गई है तो सूचित करने की कृपा अवश्य करें।

श्रीनिम्बार्कपरिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
गढ़ के सामने, कलवाड़ा,
जयपुर राजस्थान - 302037
www.nimbarkparishad.com

श्रीनिम्बार्कपरिषद्

श्रीनिम्बार्काब्द 5115 5116 वि० सं० 2077 प्रमादी नाम संवत्सर, ईस्वी 2020 – 2021

का

कपालवेध मतानुसार

"श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय"

चैत्र शुक्ल संवत 2077

25 मार्च से 8 अप्रैल 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
चैत्र शुक्ल पक्ष	1	बुध	27	05	17	27	25	मार्च	विक्रम नववर्ष प्रारम्भ, श्रीनवरात्र घट स्थापनादि प्रातः 10:31 तक, मिश्री कालीमिर्चयुत नव निम्बदलार्पण, पञ्चाङ्ग श्रवण एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकेशवभट्टाचार्य जी का पाटोत्सव
	2	गुरु	33	08	19	53	26	मार्च	सिंजारा
	3	शुक्र	39	17	22	12	27	मार्च	गणगौर व्रतोत्सव, श्रीमत्स्यावतार जयन्ती
	4	शनि	44	37	24	18	28	मार्च	
	5	रवि	49	38	26	01	29	मार्च	
	6	सोम	52	22	27	14	30	मार्च	
	7	मंगल	53	05	27	49	31	मार्च	श्रीयमुना जयन्ती, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपुरुषोत्तमाचार्य जी का पाटोत्सव (6 पूर्व विद्धा होने से आज)
	8	बुध	53	35	27	40	1	अप्रै०	
	9	गुरु	50	55	26	43	2	अप्रै०	
	10	शुक्र	46	35	24	58	3	अप्रै०	श्रीरामनवमी महोत्सव (नवमी पूर्व विद्धा होने से आज), नवरात्र उत्थापन
	11	शनि	40	30	22	30	4	अप्रै०	
	12	रवि	33	10	19	25	5	अप्रै०	श्रीकामदा एकादशी व्रत (11पूर्व विद्धा होने से आज), दमनोत्सव
	13	सोम	23	42	15	52	6	अप्रै०	
	14	मंगल	15	08	12	01	7	अप्रै०	
	15	बुध	05	17	08	04	8	अप्रै०	पूर्णिमा पुण्य, श्रीहनुमान् जयन्ती, वैशाख स्नान प्रारम्भ
			55	00	28	13			

वैशाख संवत 2077

9 अप्रैल से 7 मई 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
वैशाख कृष्ण पक्ष	2	गुरु	56	08	24	39	9	अप्रै०	
	3	शुक्र	38	00	21	31	10	अप्रै०	
	4	शनि	23	28	19	01	11	अप्रै०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्मनाभभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव (3 पूर्व विद्धा होने से आज)
	5	रवि	28	05	17	15	12	अप्रै०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	6	सोम	25	25	16	18	13	अप्रै०	
	7	मंगल	25	10	16	11	14	अप्रै०	बाबा श्रीमाधुरीशरणजी का जन्मोत्सव, श्रीअलिमाधुरी कुटी, श्रीवृन्दावन
	8	बुध	26	13	16	51	15	अप्रै०	
	9	गुरु	30	15	18	11	16	अप्रै०	
	10	शुक्र	35	00	20	04	17	अप्रै०	
	11	शनि	40	35	22	17	18	अप्रै०	श्रीवरूथिनी एकादशी, श्रीआद्यवल्लभाचार्य जयन्ती
	12	रवि	46	03	24	43	19	अप्रै०	पक्षवर्धिनी महाद्वादशी ("अमा वा पूर्णा वा षष्टिघटिका भूत्वा कियन्मात्र वर्द्धेत सा पक्षवर्धिनीत्यर्थ:" वचनानुसार अमावस्या वृद्धि होने से)
	13	सोम	53	17	27	12	20	अप्रै०	
	14	मंगल	58	43	29	37	21	अप्रै०	ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीधनञ्जयदास जी काठिया बाबा तिरोभाव तिथि
	30	बुध	60	00	29	59	22	अप्रै०	
	30	गुरु	04	50	07	55	23	अप्रै०	वैशाखी अमावस्या
वैशाख शुक्ल पक्ष	1	शुक्र	11	08	10	01	24	अप्रै०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी की 92 वीं जयन्ती
	2	शनि	14	47	11	52	25	अप्रै०	
	3	रवि	19	15	13	23	26	अप्रै०	अक्षय तृतीया, भगवान् के चन्दन का शृङ्गार, सत्तू, ऋतुफल एवं शीतल पदार्थ समर्पण, भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती, बाबा श्रीरामचन्द्र दास जी महाराज आविर्भाव तिथि
	4	सोम	21	45	14	30	27	अप्रै०	
	5	मंगल	23	45	15	08	28	अप्रै०	श्रीमद्रामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीमदशंकराचार्य जयन्ती
	6	बुध	23	55	15	12	29	अप्रै०	
	7	गुरु	22	15	14	39	30	अप्रै०	
	8	शुक्र	19	38	13	27	1	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीविलासाचार्यजी का पाटोत्सव
	9	शनि	14	22	11	36	2	मई	श्रीजानकी जयन्ती महोत्सव
	10	रवि	08	55	09	09	3	मई	
	11	सोम	01	20	06	13	4	मई	श्रीमोहिनी एकादशी, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी व्रत (एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी। त्रिस्पर्शा नाम सा ज्ञेया महापातकनाशिनी ॥) श्रीहितहरिवंश महाप्रभु जयन्ती
			52	63	26	54			
	13	मंगल	44	23	23	21	5	मई	द्वाराचार्य श्रीमुकुन्ददेवाचार्यजी का पाटोत्सव (12 क्षय होने से आज)
	14	बुध	35	43	19	45	6	मई	श्रीनृसिंह जयन्ती
	15	गुरु	26	30	16	15	7	मई	श्रीकूर्मावतार जयन्ती, श्रीबुद्धावतार पूर्णिमा, पूर्णिमा पुण्य, वैशाख स्नान पूर्ति

ज्येष्ठ संवत 2077

8 मई से 5 जून 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल घ०	प०	घ०	मि०	दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	1	शुक्र	18	47	13	02	8	मई	जलसेवा प्रारम्भ, आज से इस माह की पूर्णिमा पर्यन्त पूरे ज्येष्ठ मास में शीतल सुगन्धित जल मंदिर के मध्य संपादित उपचारों से श्रीभगवान् की सेवा करे
	2	शनि	11	33	10	15	9	मई	श्रीनरहरिदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	3	रवि	06	05	08	04	10	मई	
	4	सोम	02	23	06	35	11	मई	
	5	मंगल	00	23	05	53	12	मई	
	6	बुध	00	40	05	59	13	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीवामनभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	7	गुरु	03	10	06	51	14	मई	
	8	शुक्र	07	00	08	22	15	मई	
	9	शनि	12	05	10	23	16	मई	
	10	रवि	17	52	12	42	17	मई	
	11	सोम	24	20	15	08	18	मई	श्रीअपरा एकादशी व्रत
	12	मंगल	30	18	17	31	19	मई	महन्त श्रीगोविन्दास जी महाराज का स्मृति महोत्सव श्रीराधाकृष्ण धाम, श्रीनृसिंह कुटी अजयराजपुरा जयपुर
	13	बुध	35	07	19	42	20	मई	
	14	गुरु	40	32	21	36	21	मई	
	30	शुक्र	44	25	23	08	22	मई	अमावस्या
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	1	शनि	47	35	24	17	23	मई	
	2	रवि	49	05	25	00	24	मई	
	3	सोम	49	50	25	18	25	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का 78 वां पाटोत्सव (2 पूर्व विद्धा होने से आज)
	4	मंगल	49	28	25	09	26	मई	
	5	बुध	47	35	24	32	27	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव (4 पूर्व विद्धा होने से आज)
	6	गुरु	45	13	23	27	28	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव (5 पूर्व विद्धा होने से आज)
	7	शुक्र	40	43	21	55	29	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीस्वरूपाचार्यजी का पाटोत्सव
	8	शनि	35	50	19	57	30	मई	
	9	रवि	30	00	17	37	31	मई	श्रीवृन्दावन श्रीजी की बड़ी कुन्ज मन्दिरस्थ भगवान् श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्रजी एवं श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्रजी का पाटोत्सव
	10	सोम	23	00	14	57	1	जून	ठाकुर जी श्रीसरसबिहारीजी, श्रीललितकिशोरजी, श्रीराधामुकुन्दबिहारीजी का पाटोत्सव, श्रीनिम्बार्काचार्य पीठस्थ श्रीराधामाधव भगवान् का 254 वां पाटोत्सव , गङ्गा दशमी, ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीसंतदास जी काठिया बाबा आविर्भाव तिथि
	11	मंगल	17	07	12	04	2	जून	श्रीनिर्जला एकादशी व्रत
	12	बुध	09	20	09	05	3	जून	
	13	गुरु	01 54	72 45	06 27	06 15	4	जून	
	15	शुक्र	48	02	24	42	5	जून	पूर्णिमा, ज्येष्ठाभिषेक, जलसेवा पूर्ति

आषाढ संवत 2077

6 जून से 5 जुलाई 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
आषाढ कृष्ण पक्ष	1	शनि	42	40	22	33	6	जून	
	2	रवि	38	35	20	55	7	जून	
	3	सोम	35	47	19	56	8	जून	
	4	मंगल	35	08	19	39	9	जून	
	5	बुध	37	10	20	04	10	जून	
	6	गुरु	39	37	21	11	11	जून	
	7	शुक्र	43	30	22	52	12	जून	
	8	शनि	48	08	24	59	13	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	9	रवि	54	58	27	19	14	जून	
	10	सोम	60	00	29	36	15	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव (9 पूर्व विद्धा होने से आज)
	10	मंगल	00	10	05	40	16	जून	
	11	बुध	05	35	07	50	17	जून	श्रीयोगिनी एकादशी
	12	गुरु	10	08	09	39	18	जून	
	13	शुक्र	14	13	11	01	19	जून	
	14	शनि	15	40	11	52	20	जून	श्राद्धकार्या अमावस्या, खण्डग्रास सूर्य ग्रहण का सूतक आज रात्रि 10 - 15 बजे से प्रारम्भ होगा
	30	रवि	17	23	12	11	21	जून	अमावस्या, खण्डग्रास सूर्य ग्रहण ग्रहण स्पर्श प्रातः 10-15, मध्य 11-56, मोक्ष 13-44, पर्वकाल 3 घंटे 29 मिनिट
आषाढ शुक्ल पक्ष	1	सोम	15	53	11	59	22	जून	
	2	मंगल	15	53	11	19	23	जून	श्रीरथयात्रा महोत्सव
	3	बुध	12	27	10	14	24	जून	
	4	गुरु	08	10	08	47	25	जून	
	5	शुक्र	04	08	07	03	26	जून	
			59	10	29	04			
	7	शनि	53	23	26	53	27	जून	
	8	रवि	47	27	24	35	28	जून	
	9	सोम	42	20	22	13	29	जून	
	10	मंगल	35	20	19	49	30	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीमाधवाचार्यजी का पाटोत्सव
	11	बुध	30	10	17	29	1	जुला०	श्रीदेवशयनी एकादशी व्रत
	12	गुरु	24	38	15	17	2	जुला०	
	13	शुक्र	19	32	13	16	3	जुला०	
	14	शनि	15	17	11	34	4	जुला०	
	15	रवि	12	17	10	14	5	जुला०	श्रीगुरुपूर्णिमा, श्रीहंस भगवान् से लेकर समस्त आचार्यों एवं निज गुरुदेव का पूजन

श्रावण संवत 2077

6 जुलाई से 3 अगस्त 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल घ०	प०	घ०	मि०	दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
श्रावण कृष्ण पक्ष	1	सोम	09	47	09	22	6	जुला०	
	2	मंगल	08	55	09	02	7	जुला०	
	3	बुध	09	35	09	19	8	जुला०	
	4	गुरु	11	25	10	11	9	जुला०	
	5	शुक्र	14	42	11	38	10	जुला०	
	6	शनि	19	28	13	33	11	जुला०	
	7	रवि	25	05	15	48	12	जुला०	
	8	सोम	31	18	18	09	13	जुला०	
	9	मंगल	36	55	20	24	14	जुला०	
	10	बुध	41	43	22	19	15	जुला०	
	11	गुरु	44	43	23	45	16	जुला०	श्रीकामदा एकादशी व्रत
	12	शुक्र	47	13	24	33	17	जुला०	
	13	शनि	47	33	24	41	18	जुला०	
	14	रवि	46	12	24	10	19	जुला०	
	30	सोम	43	42	23	02	20	जुला०	श्रीहरियाली अमावस्या
श्रावण शुक्ल पक्ष	1	मंगल	39	37	21	24	21	जुला०	
	2	बुध	34	32	19	22	22	जुला०	
	3	गुरु	28	48	17	03	23	जुला०	झूलनोत्सव प्रारम्भ, हरियाली तीज, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबलभद्राचार्यजी का पाटोत्सव, श्रीविहारिनदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	4	शुक्र	22	07	14	34	24	जुला०	
	5	शनि	16	27	12	02	25	जुला०	श्रीकल्कि जयन्ती
	6	रवि	09	10	09	32	26	जुला०	
	7	सोम	03	50	07	09	27	जुला०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
			57	20	28	57			
	9	मंगल	52	25	26	59	28	जुला०	
	10	बुध	49	05	25	16	29	जुला०	
	11	गुरु	44	50	23	50	30	जुला०	
	12	शुक्र	42	20	22	42	31	जुला०	श्रीपवित्रा एकादशी व्रत (पूर्वविद्धा होने तथा ईशदुर्गान्तकक्षये वचनानुसार 8 क्षय होने से द्वादशी में करणीय)
	13	शनि	39	57	21	54	1	अग०	
	14	रवि	39	33	21	29	2	अग०	
	15	सोम	39	27	21	28	3	अग०	रक्षाबन्धन दिन में 01:52 से रात्रि 09:19 तक, पूर्णिमा पुण्य, शुक्ल-कृष्ण-यजुर्वेदी श्रावणी कर्म

भाद्रपद संवत 2077

4 अगस्त से 2 सितम्बर 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	मंगल	39	55	21	55	4	अग०	
	2	बुध	42	30	22	50	5	अग०	
	3	गुरु	46	03	24	15	6	अग०	
	4	शुक्र	51	20	26	06	7	अग०	
	5	शनि	56	17	28	18	8	अग०	
	6	रवि	60	00	29	59	9	अग०	श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी का पाटोत्सव (5 पूर्व विद्धा होने से आज)
	6	सोम	01	08	06	43	10	अग०	
	7	मंगल	08	05	09	07	11	अग०	
	8	बुध	13	25	11	16	12	अग०	लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण जयन्ती महामहोत्सव
	9	गुरु	16	40	12	58	13	अग०	श्रीनन्द महोत्सव, पलना दर्शन
	10	शुक्र	20	00	14	02	14	अग०	
	11	शनि	20	42	14	20	15	अग०	श्रीअजा एकादशी व्रत, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता दिवस 74 वां
	12	रवि	19	07	13	50	16	अग०	
	13	सोम	16	20	12	35	17	अग०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	14	मंगल	11	28	10	39	18	अग०	श्राद्धकार्या अमावस्या
	30	बुध	05 58	18 28	08 29	11 19	19	अग०	कुशग्रहणी अमावस्या
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	2	गुरु	50	23	26	13	20	अग०	
	3	शुक्र	42	45	23	03	21	अग०	
	4	शनि	34	18	19	57	22	अग०	श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीवराह जयन्ती (3 पूर्वविद्धा होने से आज)
	5	रवि	27	45	17	04	23	अग०	श्रीऋषि पञ्चमी, सामवेदी उपाकर्म
	6	सोम	21	03	14	31	24	अग०	श्रीबलदेव जयन्ती
	7	मंगल	15	37	12	22	25	अग०	
	8	बुध	11	18	10	39	26	अग०	श्रीराधा जयन्ती महामहोत्सव, स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	9	गुरु	08	33	09	25	27	अग०	श्रीमद्भागवत जयन्ती महोत्सव
	10	शुक्र	06	15	08	38	28	अग०	
	11	शनि	05	20	08	17	29	अग०	श्रीपद्मा (जलझूलनी एकादशी व्रत) श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपालाचार्यजी का पाटोत्सव
	12	रवि	05	28	08	21	30	अग०	श्रीवामन जयन्ती एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्माचार्यजी का पाटोत्सव
	13	सोम	06	38	08	49	31	अग०	
	14	मंगल	08	23	09	39	1	सित०	श्रीअनन्त चतुर्दशी, श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध
	15	बुध	11	00	10	51	2	सित०	पूर्णिमा, प्रतिपदा का श्राद्ध

प्रथम आश्विन संवत 2077

3 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
शुद्ध आश्विन कृष्ण पक्ष	1	गुरु	15	40	12	27	3	सित०	द्वितीया का श्राद्ध
	2	शुक्र	20	28	14	23	4	सित०	
	3	शनि	26	08	16	39	5	सित०	तृतीया का श्राद्ध
	4	रवि	32	38	19	07	6	सित०	चतुर्थी का श्राद्ध, महन्त श्रीद्वारकादास जी महाराज का अविर्भाव दिवस
	5	सोम	38	12	21	38	7	सित०	पंचमी का श्राद्ध
	6	मंगल	44	35	24	03	8	सित०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव, षष्ठी का श्राद्ध
	7	बुध	50	20	26	06	9	सित०	श्रीचतुरचिन्तामणि "नागाजी" महाराज का पाटोत्सव, सप्तमी का श्राद्ध
	8	गुरु	53	03	27	35	10	सित०	अष्टमी का श्राद्ध
	9	शुक्र	55	10	28	19	11	सित०	नवमी का श्राद्ध
	10	शनि	55	37	28	14	12	सित०	दशमी का श्राद्ध
	11	रवि	52	50	27	16	13	सित०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीभूरिभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव (10 पूर्व विद्धा होने से आज)
	12	सोम	48	20	25	29	14	सित०	श्रीइन्दिरा एकादशी व्रत (11 पूर्व विद्धा होने से आज)
	13	मंगल	42	07	23	00	15	सित०	एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी का श्राद्ध
	14	बुध	33	47	19	56	16	सित०	चतुर्दशी का श्राद्ध
	30	गुरु	25	30	16	30	17	सित०	अमावस्या, अमावस्या का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध
अधिक (पुरषोत्तम) आश्विन शुक्ल पक्ष	1	शुक्र	16	20	12	50	18	सित०	पुरषोत्तम (अधिक) मास आरम्भ
	2	शनि	07	27	09	10	19	सित०	
			58	00	29	39			
	4	रवि	50	20	26	27	20	सित०	
	5	सोम	43	05	23	42	21	सित०	
	6	मंगल	38	18	21	31	22	सित०	
	7	बुध	33	43	19	57	23	सित०	
	8	गुरु	32	03	19	01	24	सित०	
	9	शुक्र	30	58	18	43	25	सित०	
	10	शनि	32	37	19	00	26	सित०	
	11	रवि	33	10	19	46	27	सित०	श्रीकमला एकादशी व्रत
	12	सोम	36	30	20	59	28	सित०	
	13	मंगल	40	25	22	33	29	सित०	
	14	बुध	45	07	24	26	30	सित०	
	15	गुरु	50	28	26	35	1	अक्टू०	पूर्णिमा

द्वितीय आश्विन संवत 2077

2 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
अधिक (पुरषोत्तम) आश्विन कृष्ण पक्ष	1	शुक्र	55	37	28	56	2	अक्टू०	
	2	शनि	60	00	30	25	3	अक्टू०	
	2	रवि	02	13	07	27	4	अक्टू०	
	3	सोम	09	00	10	02	5	अक्टू०	
	4	मंगल	15	15	12	32	6	अक्टू०	
	5	बुध	20	10	14	47	7	अक्टू०	
	6	गुरु	25	20	16	36	8	अक्टू०	
	7	शुक्र	28	03	17	49	9	अक्टू०	
	8	शनि	29	27	18	16	10	अक्टू०	
	9	रवि	28	10	17	53	11	अक्टू०	
	10	सोम	25	23	16	39	12	अक्टू०	
	11	मंगल	20	15	14	36	13	अक्टू०	श्रीकमला एकादशी व्रत
	12	बुध	13	03	11	51	14	अक्टू०	
	13	गुरु	05 55	05 27	08 28	33 52	15	अक्टू०	
	30	शुक्र	46	30	25	00	16	अक्टू०	अमावस्या पुरषोत्तम (अधिक) मास पूर्ति
शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्ष	1	शनि	36	50	21	08	17	अक्टू०	शारदीय नवरात्रारम्भ घट स्थापना 11:51 से 12:34 तक
	2	रवि	27	35	17	27	18	अक्टू०	युगलशतककार श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का पाटोत्सव
	3	सोम	19	35	14	08	19	अक्टू०	
	4	मंगल	12	13	11	19	20	अक्टू०	
	5	बुध	06	40	09	07	21	अक्टू०	श्रीसरस्वती आवाहन (मूलेषु स्थापन)
	6	गुरु	02	18	07	39	22	अक्टू०	श्रीसरस्वती पूजन (पूर्वाषाढासु पूजनम)
	7	शुक्र	00	13	06	57	23	अक्टू०	श्रीसरस्वती अर्चनं (उत्तारासु अर्चन)
	8	शनि	00	18	06	59	24	अक्टू०	सरस्वती विसर्जन (श्रवणेन विसर्जयेत)
	9	रवि	02	22	07	42	25	अक्टू०	श्रीविजयादशमी निमित्त श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा, शमी पूजन,
	10	सोम	06	17	09	00	26	अक्टू०	श्रीविजयादशमी निमित्त रथयात्रा, नवरात्र उत्थापन, श्रीमध्वाचार्य जयन्ती
	11	मंगल	10	20	10	46	27	अक्टू०	श्रीपापांकुशा एकादशी व्रत
	12	बुध	15	37	12	54	28	अक्टू०	
	13	गुरु	21	50	15	15	29	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्यामाचार्यजी का पाटोत्सव
	14	शुक्र	28	03	17	45	30	अक्टू०	
	15	शनि	34	42	20	18	31	अक्टू०	शरद् पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्रीसरसदेवजी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान

कार्तिक संवत 2077

1 नवम्बर से 30 नवम्बर 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	रवि	40	22	22	50	1	नव०	
	2	सोम	47	20	25	14	2	नव०	
	3	मंगल	52	05	27	24	3	नव०	
	4	बुध	57	17	29	14	4	नव०	
	5	गुरु	60	22	30	36	5	नव०	
	6	शुक्र	60	00	30	44	6	नव०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी का पाटोत्सव तपोमूर्ति संगीताचार्य बाबा श्रीशुकदेव दास जी महाराज की आविर्भाव तिथि (दोनों उत्सव 5 पूर्व विद्धा होने से आज)
	6	शनि	02	35	07	23	7	नव०	
	7	रवि	02	08	07	29	8	नव०	
	8	सोम	00 57	09 02	06 29	51 28	9	नव०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	10	मंगल	52	27	27	22	10	नव०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रवणभट्टचार्यजी का पाटोत्सव (9 क्षय होने से आज)
	11	बुध	45	23	24	41	11	नव०	
	12	गुरु	37	02	21	30	12	नव०	रमा एकादशी व्रत, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीमाधवभट्टाचार्य जी का पाटोत्सव (11 पूर्व विद्धा होने से आज) श्रीमहावाणीकार रसिकराजराजेश्वर श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	13	शुक्र	28	15	17	59	13	नव०	श्रीधन्वन्तरि जयन्ती, रूप चतुर्दशी
	14	शनि	19	20	14	18	14	नव०	श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपमालिका प्रदोषवेलायाम् दीपोत्सव, श्रीराधिकोत्थापन
	30	रवि	10	08	10	37	15	नव०	अमावस्या, श्रीअन्नकूट महोत्सव, श्रीगोवर्धनपूजा
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1	सोम	11 53	35 03	07 27	06 57	16	नव०	यम द्वितीया, भाई दूज
	3	मंगल	47	00	25	17	17	नव०	
	4	बुध	41	57	23	16	18	नव०	ब्रह्मचारी श्रीयुगलशरणजी महाराज, पाटनारायण धाम की आविर्भाव तिथि (3 पूर्वविद्धा होने से आज)
	5	गुरु	38	03	21	59	19	नव०	ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीधनञ्जयदास जी काठिया बाबा आविर्भाव तिथि
	6	शुक्र	37	38	21	30	20	नव०	
	7	शनि	37	30	21	48	21	नव०	
	8	रवि	40	25	22	51	22	नव०	गोपाष्टमी महोत्सव, गो पूजन, द्वाराचार्य श्रीस्वभूरामदेवाचार्यजी की जयन्ती
	9	सोम	44	37	24	32	23	नव०	श्रीहंस - श्रीसर्वेश्वर प्रभु प्राकट्य दिवस एवं श्रीसनकादि जयन्ती, अक्षय नवमी, आंवला पूजन, द्वापरयुगादि तिथि
	10	मंगल	50	00	26	42	24	नव०	
	11	बुध	56	27	29	10	25	नव०	
	12	गुरु	60	00	30	59	26	नव०	श्रीदेव प्रबोधिनी एकादशी (11 पूर्व विद्धा होने से आज) वञ्जुली महाद्वादशी ("सम्पूर्णकादशी यत्र द्वादशी च तथा भवेत। त्रयोदश्यां मुहूर्तोर्द्ध्वं वञ्जुली सा हरिप्रिया ॥" अनुसार दो द्वादशी होने से)
	12	शुक्र	02	17	07	46	27	नव०	
	13	शनि	08	00	10	21	28	नव०	ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीसंतदास जी काठिया बाबा तिरोभाव तिथि
	14	रवि	14	05	12	47	29	नव०	श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत
	15	सोम	19	35	14	59	30	नव०	पूर्णिमा, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का 5116 वां जयन्ती महोत्सव, कार्तिक स्नान पूर्ण

मार्गशीर्ष संवत 2077

1 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2020 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	मंगल	24	15	16	52	1	दिस०	
	2	बुध	28	37	18	22	2	दिस०	
	3	गुरु	30	18	19	27	3	दिस०	
	4	शुक्र	32	08	20	03	4	दिस०	
	5	शनि	32	25	20	10	5	दिस०	
	6	रवि	30	58	19	45	6	दिस०	
	7	सोम	28	13	18	47	7	दिस०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	8	मंगल	25	25	17	17	8	दिस०	श्रीललितकिशोरीदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	9	बुध	20	25	15	17	9	दिस०	
	10	गुरु	13	18	12	51	10	दिस०	
	11	शुक्र	07 59	37 42	10 31	04 02	11	दिस०	श्रीउत्पत्ति एकादशी व्रत, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी (एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी । त्रिस्पर्शा नाम सा प्रोक्ता ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥")
	13	शनि	51	10	27	53	12	दिस०	
	14	रवि	43	35	24	44	13	दिस०	
	30	सोम	35	47	21	46	14	दिस०	अमावास्या
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1	मंगल	29	45	19	06	15	दिस०	
	2	बुध	23	15	16	54	16	दिस०	श्रीनिम्बार्काचार्य सेतुकाकार श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	3	गुरु	20	08	15	17	17	दिस०	द्वाराचार्य श्रीउद्धवघमण्डदेवाचार्यजी प्राकट्योत्सव
	4	शुक्र	17	33	14	23	18	दिस०	
	5	शनि	17	07	14	14	19	दिस०	ठाकुर श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज का प्राकट्योत्सव,
	6	रवि	18	00	14	52	20	दिस०	
	7	सोम	22	08	16	15	21	दिस०	
	8	मंगल	27	02	18	14	22	दिस०	
	9	बुध	33	05	20	39	23	दिस०	
	10	गुरु	39	58	23	17	24	दिस०	
	11	शुक्र	45	50	25	54	25	दिस०	श्रीमोक्षदा एकादशी व्रत एवं श्रीगीता जयन्ती
	12	शनि	52	10	28	18	26	दिस०	
	13	रवि	57	15	30	20	27	दिस०	श्रीव्यञ्जन द्वादशी, श्रीनारद जयन्ती (12 पूर्व विद्धा होने से आज)
	14	सोम	60	00	31	19	28	दिस०	
	14	मंगल	00	05	07	54	29	दिस०	
	15	बुध	03	07	08	58	30	दिस०	पूर्णिमा व्रत, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकृपाचार्य जी का पाटोत्सव

पौष संवत 2077

31 दिसम्बर से 28 जनवरी 2021 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
पौष कृष्ण पक्ष	1	गुरु	05	25	09	30	31	दिस०	
	2	शुक्र	05	35	09	33	1	जन०	
	3	शनि	04	37	09	10	2	जन०	
	4	रवि	02 59	17 47	08 31	22 14	3	जन०	
	6	सोम	55	30	29	47	4	जन०	
	7	मंगल	52	10	28	03	5	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव (6 पूर्व विद्धा होने से आज)
	8	बुध	47	15	26	06	6	जन०	
	9	गुरु	41	35	23	58	7	जन०	
	10	शुक्र	35	50	21	40	8	जन०	
	11	शनि	30	30	19	17	9	जन०	श्रीसफला एकादशी व्रत एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपालभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	12	रवि	23	30	16	53	10	जन०	
	13	सोम	18	17	14	32	11	जन०	
	14	मंगल	12	52	12	22	12	जन०	श्राद्धकार्या अमावस्या
	30	बुध	08	10	10	30	13	जन०	अमावस्या
पौष शुक्ल पक्ष	1	गुरु	04	48	09	01	14	जन०	मकर संक्रान्ति पुण्यं प्रात: 08:16 से
	2	शुक्र	02	08	08	05	15	जन०	
	3	शनि	00	57	07	45	16	जन०	
	4	रवि	02	15	08	08	17	जन०	
	5	सोम	05	22	09	14	18	जन०	
	6	मंगल	08	45	10	59	19	जन०	
	7	बुध	15	25	13	15	20	जन०	
	8	गुरु	21	15	15	50	21	जन०	
	9	शुक्र	28	13	18	29	22	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनारायणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	10	शनि	33	40	20	56	23	जन०	
	11	रवि	38	07	22	58	24	जन०	पुत्रदा एकादशी व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ, ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीरामदास जी काठिया बाबा तिरोभाव तिथि
	12	सोम	42	25	24	24	25	जन०	श्रीमुकुन्दद्वाराचार्य श्रीमाधवदास जी का अविर्भाव दिवस, महन्त श्रीद्वारकादास जी महाराज का स्मृति महोत्सव
	13	मंगल	44	43	25	11	26	जन०	72 वां राष्ट्रीय गणतन्त्र दिवस
	14	बुध	44	58	25	17	27	जन०	
	15	गुरु	43	20	24	46	28	जन०	पूर्णिमा

माघ संवत 2077

29 जनवरी से 27 फरवरी 2021 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल घ०	प०	घ०	मि०	दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
माघ कृष्ण पक्ष	1	शुक्र	40	22	23	42	29	जन०	
	2	शनि	37	00	22	12	30	जन०	जगदुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज का चतुर्थ निकुञ्ज प्रवेशोत्सव
	3	रवि	32	30	20	24	31	जन०	
	4	सोम	27	35	18	25	1	फर०	
	5	मंगल	22	23	16	19	2	फर०	
	6	बुध	19	05	14	12	3	फर०	
	7	गुरु	12	33	12	07	4	फर०	श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती
	8	शुक्र	07	33	10	07	5	फर०	
	9	शनि	02 57	10 42	08 30	13 26	6	फर०	
	11	रवि	53	38	28	47	7	फर०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपेश्वरशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव (10 क्षय होने से आज)
	12	सोम	50	18	27	19	8	फर०	श्रीषटतिला एकादशी व्रत (ईशदुर्गान्तकक्षये अनुसार दशमी क्षय होने से एकादशी त्यागकर आज द्वादशी में व्रत कर्तव्य) श्रीललितमोहिनीदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	13	मंगल	47	35	26	05	9	फर०	
	14	बुध	44	58	25	09	10	फर०	
	30	गुरु	43	13	24	35	11	फर०	माघी मौनी अमावस्या, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव (14 पूर्व विद्धा होने से आज)
माघ शुक्ल पक्ष	1	शुक्र	42	35	24	29	12	फर०	
	2	शनि	43	27	24	56	13	फर०	
	3	रवि	46	28	25	59	14	फर०	
	4	सोम	50	35	27	37	15	फर०	
	5	मंगल	55	57	29	46	16	फर०	श्रीसरस्वती पूजन
	6	बुध	60	00	31	06	17	फर०	श्रीवसन्तोत्सव, भाष्यकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिवासाचार्यजी एवं जाह्नवीकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीदेवाचार्यजी का पाटोत्सव, गीतगोविन्दकार श्रीजयदेव कवि जयन्ती महोत्सव, श्रीरसिकदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान (5 पूर्व विद्धा होने से आज)
	6	गुरु	02	42	08	18	18	फर०	
	7	शुक्र	08	45	10	58	19	फर०	
	8	शनि	15	30	13	32	20	फर०	
	9	रवि	21	37	15	42	21	फर०	
	10	सोम	25	37	17	16	22	फर०	
	11	मंगल	28	00	18	05	23	फर०	श्रीजया एकादशी, महन्त श्रीगोविन्ददास जी महाराज का जन्मोत्सव
	12	बुध	28	03	18	05	24	फर०	श्रीजया महाद्वादशी व्रत ('द्वादश्यां तु सिते पक्षे यदा ऋक्षं पुनर्वसु । नाम्ना सा तु जया ख्याता तिथिनामुत्तमा तिथिः।।' अनुसार पुनर्वसु नक्षत्र से)
	13	गुरु	26	50	17	19	25	फर०	श्रीबिहारीदास त्यागी जी महाराज की तिरोभाव तिथि
	14	शुक्र	22	27	15	50	26	फर०	
	15	शनि	17	23	13	47	27	फर०	पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति

फाल्गुन संवत 2077

28 फरवरी से 28 मार्च 2021 तक

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	रवि	11	53	11	19	28	फर०	
	2	सोम	04 57	48 25	08 29	35 46	1	मार्च	
	4	मंगल	50	10	26	59	2	मार्च	
	5	बुध	44	18	24	21	3	मार्च	
	6	गुरु	38	03	21	59	4	मार्च	
	7	शुक्र	32	55	19	54	5	मार्च	
	8	शनि	29	37	18	10	6	मार्च	
	9	रवि	25	33	16	47	7	मार्च	
	10	सोम	22	37	15	44	8	मार्च	
	11	मंगल	21	37	15	02	9	मार्च	श्रीविजया एकादशी
	12	बुध	20	25	14	40	10	मार्च	श्रीविजया महाद्वादशी व्रत ('यदा तु शुक्ल द्वादश्यां नक्षत्र श्रवणं भवेत्। विजया सा तिथिः प्रोक्ता तिथिनामुत्तमा तिथिः॥' अनुसार श्रवण नक्षत्र होने से)
	13	गुरु	20	27	14	40	11	मार्च	
	14	शुक्र	21	45	15	02	12	मार्च	श्रीमहाशिवरात्री व्रत
	30	शनि	23	13	15	51	13	मार्च	अमावस्या
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	रवि	27	02	17	06	14	मार्च	
	2	सोम	30	25	18	49	15	मार्च	
	3	मंगल	35	13	20	59	16	मार्च	
	4	बुध	42	27	23	28	17	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीविश्वाचार्यजी का पाटोत्सव
	5	गुरु	49	33	26	09	18	मार्च	
	6	शुक्र	55	32	28	48	19	मार्च	
	7	शनि	60	00	30	33	20	मार्च	
	7	रवि	01	52	07	10	21	मार्च	
	8	सोम	06	30	09	00	22	मार्च	
	9	मंगल	09	00	10	07	23	मार्च	
	10	बुध	09	00	10	23	24	मार्च	
	11	गुरु	07	50	09	47	25	मार्च	आमलकी एकादशी
	12	शुक्र	04 59	38 13	08 30	21 11	26	मार्च	
	14	शनि	52	05	27	27	27	मार्च	
	15	रवि	44	37	24	18	28	मार्च	होलिकापर्व - होलिका दीपनं प्रदोषकाल सायं 06:25 से 06:49 तक

चैत्र संवत 2077

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल				दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ०	प०	घ०	मि०			
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	सोम	35	30	20	54	29	मार्च	धूलिवन्दन, फागोत्सव, दोलोत्सव
	2	मंगल	27	15	17	27	30	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगांगलभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	3	बुध	19	57	14	06	31	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	4	गुरु	12	00	11	02	1	अप्रै०	
	5	शुक्र	05 58	25 42	08 29	15 58	2	अप्रै०	
	7	शनि	55	20	28	12	3	अप्रै०	
	8	रवि	51	03	26	59	4	अप्रै०	
	9	सोम	50	05	26	19	5	अप्रै०	
	10	मंगल	50	25	26	09	6	अप्रै०	
	11	बुध	50	38	26	29	7	अप्रै०	
	12	गुरु	52	47	27	12	8	अप्रै०	श्रीपापविमोचिनी एकादशी (11 पूर्व विद्धा होने से आज) पक्षवर्धिनी महाद्वादशी ("अमा वा पूर्णा वा षष्टिघटिका भूत्वा कियन्मात्र वर्द्धेत सा पक्षवर्धिनीत्यर्थ:" वचनानुसार अमावस्या वृद्धि होने से)
	13	शुक्र	55	40	28	28	9	अप्रै०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्यामभट्टाचार्यजी एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव (12 पूर्व विद्धा होने से आज)
	14	शनि	60	25	30	05	10	अप्रै०	
	30	रवि	60	00	30	10	11	अप्रै०	श्राद्धकार्या अमावस्या
	30	सोम	5	22	08	02	12	अप्रै०	अमावस्या, विक्रम संवत्सर 2077 पूर्ति

चैत्र मास शुक्ल पक्ष

ब्रह्माजी ने सृष्टि का आरंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही किया था। साथ ही इस दिन श्रीहरि ने मत्स्यावतार भी लिया था। सत्ययुग का आरंभ इसी तिथि को हुआ था। इस दिन संवत्सर का पूजन, नवरात्रि का घट स्थापन, पंचांग श्रवण आदि करें। प्रातः काल मन्दिर तथा निज गृह पर ध्वजारोपण करें, श्रीठाकुरजी को नवीन पोशाक धारण करावें, वंदनवार लगावें, शंखध्वनि पूर्वक नवसंवत्सर का अभिनन्दन करें। नीम की नवीन पत्तियाँ कालीमिर्च मिश्री तथा मक्खन का भोग लगावें।

चैत्र शुक्ल नवमी को श्रीमान् रघुकुलकुमुदप्रकाशक अनंत अनवद्य गुणमंदिर भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का अवतार हुआ। उस दिन सर्वदा उपवास करना चाहिये। रामनवमी पूर्वविद्धा त्याज्य है। पूर्वविद्धा तिथि का त्याग करना यही वैष्णव का लक्षण है। विष्णुभक्तों को रामनवमी अष्टमी विद्धा त्याग कर देना चाहिये। नवमी पूर्वविद्धा हो तो दशमी में व्रत करे और दशमी की वृद्धि ना होने पर पारणा का त्याग करना पड़े तो भी कोई दोष नहीं। इस वर्ष चैत्र शुक्ल अष्टमी 53 घटी 35 पल की है जो 45 घटी ऊपर होकर नवमी तिथि का वेध कर रही है अतः चैत्र शुक्ल नवमी अष्टमी से विद्धा होने के कारण त्याज्य होकर श्रीरामनवमी का व्रतोत्सव चैत्र शुक्ल दशमी शुक्रवार दिनाँक 03 अप्रैल 2020 को मनाया जायेगा।
अष्टमी के दिन दंतधावन स्नान करे, एक बार हविष्यान्न का भोजन करे पृथ्वी पर शयन करें। रामनवमी के दिन श्रीराम का ध्यान करता हुआ व्रतीजन अपराह्न समय में सूतिका गृह आदि बनाकर संतजनों को बुलावे और श्रीरामचन्द्रजी प्रकट हुए ऐसी भावना करके परम वैष्णव भक्ति पूर्वक विधि से पंचामृत द्वारा श्रीभगवान् का महाभिषेक करे, पूजन करके नैवैद्य भोग लगाकर महा उत्सव करे।

श्रीसनत्कुमारों ने कहा है - चैत्र शुक्ल एकादशी को महाविष्णु भगवान् को डोल पर विराजमान करके भक्तिपूर्वक डोलोत्सव करे। हिण्डोला सहित मण्डप बनाकर डोल पर विराजमान कर श्रीभगवान् की पूजा करके उन्हें झुलावें।

श्रीसनत्कुमार तथा श्रीनारद जी के वचन हैं कि - चैत्र शुक्लद्वादशी के दिन वैष्णवजन जितेन्द्रिय होकर भक्तिपूर्वक यथाशक्ति वेदोक्त विधिसे दमनोत्सव करे। यह दमनोत्सव पारणाके दिनमें द्वादशीका अभाव होने पर त्रयोदशीके दिन करे।

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को परम वैष्णव महाभागवत अंजनीनन्दन श्रीहनुमान् जी का जयन्ती उत्सव उल्लासपूर्वक संपन्न करें।

वैशाख मास

श्रीमुकुन्दद्वाराचार्य श्रीमाधवदासजी महाराज के कृपापात्र शिष्य बाबा श्रीमाधुरीशरणजी महाराज का आविर्भाव दिवस वैशाख कृष्ण सप्तमी को श्रीअलीमाधुरी कुटी रमणरेती श्रीवृन्दावन में आयोजित होता है। आप संत सेवा परायण और श्रीरासबिहारी सरकार की दिव्य नित्यनिकुञ्ज लीला विहार के अनन्य निष्ठ रहे। भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु तथा श्री श्रीजी महाराज के प्रति आपकी अगाध निष्ठा रही। रासलीला तथा श्रीमहावाणी जी में निर्दिष्ट अष्टयाम प्रणाली के अनुरूप सेवा पद्धति का प्रसार किया। श्रीराधाष्टमी महोत्सव तथा श्रीहोरी लीला अपने स्थान श्रीअलीमाधुरी कुटी में आरम्भ की जो अद्यतन प्रवर्तमान है। श्रीरासबिहारी सरकार की नित नवीन सेवा प्रदर्शन के कारण आप संत समाज में योगमाया के नाम से प्रसिद्ध थे। बाबा श्रीमाधुरीशरणजी ने अपने व्यवस्थापकत्व में श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय का चतुर्दिक विकास किया।

अनंत श्री विभूषितजगद्गुरू श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई 1929 को निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। आप श्री 11 वर्ष की अवस्था में विक्रम संवत 1997 आषाढ शुक्ला द्वितीया रविवार (रथ यात्रा) के शुभ अवसर पर अनंत श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीबालकृष्णशरण देवाचार्य जी श्री श्रीजी महाराज से विरक्त वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। विक्रम संवत 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर चौदह वर्ष की अवस्था में जयेष्ठ शुक्ल द्वितीया शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए।

वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन भगवान् श्रीपरशुरामजी का अवतार हुआ। 'वैशाखमास में शुक्ल पक्ष की तृतीया पुनर्वसु नक्षत्र में रात्रि के प्रथम प्रहरमें उच्च राशि के छः ग्रह थे और राहु मिथुन राशि पर था तब माता रेणुका के गर्भ से हरि भगवान् ने स्वयं श्रीपरशुराम नाम अवतार धारण किया। वैशाख शुक्ल तृतीया में त्रेतायुग की प्रवृत्ति हुई और उस दिन त्रयीधर्म अर्थात् वेद धर्म की प्रवृत्ति हुई। इसलिये लोक में इस तिथि को अक्षय तृतीया कहते हैं। यह तृतीया हरिभगवान् को बहुत प्यारी है इसमें स्नान, दान, पूजा, श्राद्ध, जप और पितरों का तर्पण करने से अक्षय फल प्राप्त होता है।

चन्दनोत्सव भी इसी दिन करे। प्रतिदिन की भाँती मंगला करके श्रीठाकुरजी को अभ्यंग पूर्वक स्नान कराकर गुलाब जल में घिसे हुए केशर कपूर चन्दन का सर्वांग में लेपन करें, अत्यन्त महीन वस्त्र धारण करावें, शीतल आभूषण पुष्प आदि से श्रृंगार करा सिंहासन पर विराजमान करें। मिश्री, मेवा, सत्तू, भीगी हुई चने की दाल, ककड़ी, खरबूजा, शरबत, आम का पना, आदि शीतल सामग्री का भोग लगावें, आरती करें। राजभोग तक चन्दन यात्रा के पद गान करें। शिखरण खीर, मगद के लड्डू, मोहन भोग आदि राजभोग करें। विविध प्रकार से शीतल सामग्री से जैसे खस का बँगला, खस के पंखे आदि से ठाकुर जी को सुख पहुंचावें।

दोनों उत्सव के निमित्त यह तृतीया विद्धा अथवा अधिक होने पर पर दिन में ही उत्सव करे। स्कन्द पुराण में कहा है - वैशाख की तृतीया पूर्वविद्धा निन्दित है। चतुर्थी युक्त तृतीया शुभ होती है। इस कारण सर्व प्रयत्नों से उत्सव में उसको ही लेवे। तथा वशिष्ठ संहिता में कहा है,- 'रोहिणी नक्षत्र बुधवार युक्त तृतीया हो तो भी पूर्वविद्धा वर्जित है। उस दिन अज्ञानता से अर्थात् पूर्वविद्धा के दोष को बिना जाने, भक्तिपूर्वक करनेपर भी पुरातन किया हुआ पुण्य नष्ट हो जाता है। इत्यादि वचनों से पूर्वविद्धा का सर्वथा त्याग करना चाहिये। चतुर्थी में जो एक कलामात्र भी तृतीया हो तो वह सम्पूर्ण होती है इसलिए इस परविद्धा में ही दोनों उत्सव करें।

श्रीरामभद्र सरकार की परम आह्लादिनी शक्ति तथा वैष्णव जनों को आनंददायिनी जगज्जननी भगवती श्रीजानकी जी का जन्म वैशाख शुक्ल नवमी को हुआ। उस दिन वैष्णवों को श्रीजानकी जी के जन्म का उत्सव करना चाहिये। श्रीजानकी जी का जन्म का महोत्सव अत्यन्त प्रेम के साथ करना चाहिये। यह व्रत वैशाख शुक्ल नवमी शुद्ध हो उस दिन करे। दशमी से विद्ध हुई नवमी में व्रत करे परन्तु अष्टमी युक्त नवमी में यह उत्सव ना करे।

वैशाख शुक्ल द्वादशी को श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी के द्वादश शिष्यों में से श्रीमुकुन्ददेवाचार्य जी का पाटोत्सव होता है। इस वर्ष वैशाख शुक्ल द्वादशी क्षय होने से यह उत्सव वैशाख शुक्ल त्रयोदशी 5 मई 2020 मंगलवार को आयोजित होगा।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन प्रचंड और लंबी भुजाओं वाले महाबलवान, हिरण्यकश्यप के मदनाशक श्रीप्रहलाद केप्रीतिपात्र, कोमल ह्रदय, ऐसे श्रीमन्नृसिंह भगवान् का व्रत पूर्वक जन्मोत्सव करे। नृसिंहपुराणमें कहा है - 'वैशाख शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को पापनाशक और पुण्य कारक हमारा जन्मोत्सव करे। यह हमारा व्रत स्वाति नक्षत्र और शनिवार युक्त चतुर्दशी को करना चाहिये।" तथा स्कन्द पुराण में कहा है -'वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन सोमवार स्वाती नक्षत्र में प्रदोष समय में श्रीनृसिंह भगवान् का अवतार हुआ।" यदि वह विद्ध हो तो परदिन में करना चाहिये। 'त्रयोदशी से संयुक्त चतुर्दशी के दिन व्रत नहीं करें। यह व्रत नृसिंह भगवान् की तुष्टि के लिए पूर्णिमा युक्त चतुर्दशी में करे। जो कोई मनुष्य अज्ञानता से त्रयोदशी विद्ध चतुर्दशी का व्रत करता है, वह धन और सन्तान से वियोग पाता है; इस कारण त्रयोदशी युक्त चतुर्दशी का परित्याग करे' ऐसी श्रीनृसिंह भगवान् की उक्ति है।

उस दिन प्रातः समय स्नान आदि नित्यक्रिया करके मन्दिर का संस्कार भलीभांति करे। सन्ध्याकाल में संत वैष्णव को बुलाकर 'नृसिंह भगवान् का जन्म हुआ ऐसी भावना करें और उनकी पंचामृत आदि से महाभिषेक कर विधि पूर्वक पूजा करे, उत्तम नैवेद्य भोग लगावै, आरती करे। और वैष्णव शास्त्र की रीति से नृसिंह लीला का आयोजन करे।

वैशाख की पूर्णिमा के दिन वैष्णवजन उत्साह और प्रसन्नता पूर्वक भक्तिसे जलस्थ अर्थात् जलमंदिर में स्थित हुए भगवान् की पूजा करे। इसी प्रकार ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी पर्यन्त जलशायी नारायणका गीत वाद्य पताका आदिसे महोत्सव करे।

ज्येष्ठ मास

सम्पूर्ण ज्येष्ठ मास में जल मंदिर के मध्य संपादित उपचारों से श्रीभगवान् की सेवा करे। जलक्रीड़ा के उपयोगी सब सामग्री और विशेष भोग धरें। प्रतिदिन जलविहार करवाकर उस ऋतु में होने वाले पुष्पों से भगवान् का पूजन करें।

गौलोक वासी महन्त श्रीगोविन्दास जी महाराज का स्मृति महोत्सव श्रीनृसिंह कुटी अजयराजपुरा जयपुर में ज्येष्ठ द्वादशी को मनाया जाता हैं। ज्येष्ठ कृष्णा पन्चमी से द्वादशी तक श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा ज्ञान यज्ञ, सन्त वैष्णव सेवा, युगलनाम संकीर्तन पूर्वक आठ दिवसीय समारोह अत्यन्त वृहद् स्तर से महन्त श्रीवृन्दावन दास जी महाराज के निर्देशन में संपन्न होता हैं।

अनंत श्री विभूषित जगद्गुरू श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्री जी महाराज विक्रम संवत 2000 में जगद्गुरू श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरण देवाचार्य जी के गोलोकवास होने पर चौदह वर्ष की अवस्था में जयेष्ठ शुक्ल द्वितीया विक्रम संवत 2000 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आप श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के 48 वे आचार्य के रूप में श्रीनिम्बार्काचार्य गादी पर आसीन हुए। आपश्री के कार्यकाल में सम्प्रदाय की चतुर्दिक उन्नति हुई है।

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य दिग्विजयी प्रस्थानत्रय भाष्यकार श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य इस आचार्य परम्परा में श्रीहंस भगवान् से 33 वी संख्या में श्रीनिम्बार्क पीठ पर विराजमान थे। आपका स्थिति काल 12 वीं शताब्दी है। आपने भारत भ्रमण कर तीन बार दिग्विजय किया था। कश्मीर में अधिक निवास करने के कारण आपके नाम "काश्मीर" विशेषण प्रसिद्ध हो गया था। कश्मीर में ही अपने वेदान्त सूत्रों पर "कौस्तुभ प्रभा" नामक विशद् भाष्य लिखा और उज्जैन में कुछ दिनों स्थायी निवास कर श्रीमद्भगवत पर टीका लिखी, किन्तु उसमें 'वेदस्तुति' वाला सन्दर्भ ही उपलब्ध है। इसी प्रकार आपका एक "क्रम दीपिका" नामक ग्रन्थ भी है, जिसमें मंत्र अनुष्ठान का विधि पूर्वक वर्णन है। श्रीमद्भगवद्गीता "तत्व प्रकाशिका" नामक एवं उपनिषदों पर भी आपकी विस्तृत संस्कृत टीका है।

एक बार आपने सुना कि श्री कृष्ण जन्म भूमि मथुरा में विश्राम घाट के मुख्य मार्ग के द्वार पर तांत्रिक यवनों ने एक ऐसा यन्त्र लगाया है कि उसके नीचे से जो कोई हिन्दू निकलता है, वह सुन्नत होकर मुसलमान बन जाता है। इस प्रकार उस तांत्रिक प्रयोग के बल पर कई हिन्दू मुस्लिम बना लिये गये तब आपने वहां आकर अपनी तन्त्र मन्त्र शक्ति से उसी स्थान पर एक ऐसा यंत्र स्थापित किया जिससे उसके नीचे से निकलने पर यवनों के शरीर में प्रचण्ड दाह होने लगा। यह आश्चर्य देख यवनों का मुखिया काजी आकर आपके शरणागत हुआ और आगे के लिए एक पट्टा (प्रतिज्ञा पत्र) लिख कर दिया कि हम तथा अन्य सभी व्रज मण्डल चौरासी कोस के यवन आपकी शरण में रहेंगे इत्यादि और भी उस पट्टे में अनेक विषय उल्लिखित हैं। उस प्रतिज्ञा पत्र की प्रतिलिपि अद्यावधि सुरक्षित विद्यमान है। आपने मुसलमान बने हुये हिन्दुओं की पुनःशुद्धि भी की। इस प्रकार सर्वत्र फैले हुऐ पाखण्ड का नाश कर वैष्णव धर्म की विजय पताका फहराई। आपश्री का पाटोत्सव ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी को मनाया जाता है।

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को दशहरा कहते हैं। 'ज्येष्ठ, शुक्ल पक्ष, दशमी, बुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनंद योग, कन्या राशि का चंद्रमा, वृषभ राशि का सूर्य ये दस योग से गङ्गा दशमी कहलाती है। इस दिन गंगा में स्नान करनेसे मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। कहीं कहीं मंगलवार का योग कहा है कहीं बुधवार का योग कहा है, परंतु यह कल्पभेद से व्यवस्था है। पूर्वा हो वा परा हो अर्थात् नवमीविद्धा दशमी हो वा एकादशी विद्धा हो जिसमें योग अधिक हों वही ग्रहण करना चाहिये। उस दशहरा के दिन 'नारायण्यै गंगायै नमो नमः' इस मंत्र से गंगाजी का पूजन कर उत्सव करे। चन्दन, कपूर, केशर के साथ घिसे हुये शीतल जलसे श्रीभगवान् को स्नान कराकर शीतल वस्त्रालङ्कार धारण करवायें तथा विशेषता पूर्वक शीतलगुण विशिष्ट पदार्थों का नैवेद्य समर्पण करे।

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को ही ग्राम कलवाडा जयपुर में विराजमान ठाकुरजी श्रीसरसबिहारी जी सरकार, ठाकुरजी श्रीललितकिशोर जी सरकार व श्रीराधामुकुन्द बिहारीलाल जी का पाटोत्सव अत्यन्त उल्लास से सम्पन्न होता है। इस अवसर पर अत्यन्त मनोहारी फूल बँगला, पद गायन तथा सन्त वैष्णव सेवा सम्पन्न होती है।

आचार्यपीठ में विराजमान श्रीराधामाधव भगवान् का पाटोत्सव भी आज ही के दिन आचार्यपीठ में वृहद् आयोजन पूर्वक सम्पन्न होता है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी निर्जला एकादशी कहलाती है। पद्म पुराण में व्यासजी का वचन है कि - जब वृष राशि स्थित अथवा मिथुन राशि स्थित सूर्य होता है, तब ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष एकादशी को प्रयत्नपूर्वक निर्जल व्रत करे अर्थात् उस दिन जल भी ना पीवे। इस दिनमें स्नानके और आचमनके अतिरिक्त जलको तजकर व्रत करे इस एक ही व्रतके प्रभावसे बारह द्वादशियों के व्रत करनेका फल प्राप्त होता है।

ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन श्रीभगवान् को शीतल सुगन्धित जल से ज्येष्ठाभिषेक करावें तथा शीतल भोग विशेष धरावें।

आषाढ मास

आषाढ कृष्ण अमावस्या रविवार 21 जून 2020 को होने वाला सूर्य ग्रहण उत्तर भारत के कुछ भागों में कंकणाकृति तथा शेष भागों में खंडग्रास दृष्टिगोचर होगा। रविवार को सूर्यग्रहण होने से "चूड़ामणि सूर्यग्रहण" के नाम से कहा जाता है। शास्त्रों में चूड़ामणि सूर्यग्रहण के समय स्नान, दान, जप, पाठ आदि का विशेष महत्त्व बतलाया है।

सूतक-ग्रहण का सूतक जयपुर में दिनांक 20 जून, 2020 ई. को रात्रि 10:15 बजे से आरम्भ होगा। सूतक काल में बालक, वृद्ध व रोगियों को छोड़कर किसी को भी भोजनादि नहीं करना चाहिये।

ग्रहण के समय सूर्य को देखना, भोजन, शयन, मूत्रादि त्याग, तैलाभ्यंग वर्जित होते हैं। पका अन्न, कटी सब्जी - फल ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं। अतः उन्हें नहीं खाना चाहिये। घी-तेल में पका अन्न, घी, तेल, दूध, दही, आदि में कुशा रखने से दूषित नहीं होते। ग्रहण काल में मन्त्र जाप विशेष रूप से करना चाहिये।

जयपुर में ग्रहण का स्पर्श 10:15 पर, ग्रहण मध्य 11: 56 पर, ग्रहण मोक्ष 13 : 44 पर होगा ग्रहण का पर्वकाल 03 घंटे 29 मिनट का रहेगा।

आषाढ शुक्ल द्वितीया के दिन रथोत्सव (रथयात्रा उत्सव) करें। तिथि का अभाव हो अर्थात् द्वितीया तिथि न हो तो केवल पुष्य नक्षत्र में ही उस उत्सवको नहीं करना चाहिये। क्योंकि 'तिथिके न होने पर जो मनुष्य (रथ यात्रा आदि) कर्म करते हैं उनका किया हुआ कर्म वृथा होजाता है, और वे अपनेको नरकमें लेजाते हैं।" इस गर्गोक्ति से तिथि के विना निषेध होने से केवल नक्षत्र में उत्सव न करें। विद्धाधिक होने पर दूसरे दिन तृतीया में यह उत्सव करें; क्योंकि 'विद्धाधिक पूर्वव्यापिनी तिथि में जो कुछ दिया जाता है व दानपूजन आदि किया जाता है वह उस दिनका किया हुआ कुछ भी भगवान् ग्रहण नहीं करते हैं 'ऐसा श्रीनारद वचन होने से विद्धाधिक पूर्व व्यापिनी तिथि में यह उत्सव नहीं करे।

आषाढ शुक्ल एकादशी के दिन शयनोत्सव करे। आषाढ शुक्ल एकादशी को हरि भगवान् क्षीर सागर के जल में शेषशय्या पर शयन करते हैं। आषाढ शुक्ल एकादशी के दिन वैष्णवों को निमन्त्रित कर श्रीभगवान् की भली भाँति पूजा करे। वस्त्र चन्दन आदि और छत्र, चामर, ध्वजा, पताका आदि अर्पण कर भगवान् को सन्तुष्ट करे। अनन्तर आगे नाच होता हो ऐसे श्रीभगवान् को पालकी में बिठाकर जलाशय के निकट लेकर जावे। जलाशय का अभाव हो तो उसके बदले बहुत सा दूध रखे। सर्व उपचार पूर्वक जल के समीप पुष्पांजलि देकर सिंहासन पर ठहरे हुए भगवान् को धूपआदि लेकर उपहार नैवेद्यतक उपचार देवे और इन मंत्रों से प्रार्थना करे कि - "हे जगन्नाथ ! आपके सोने पर सब जगत सो जाता है और जागने पर जागता है। हे अच्युत ! मुझसे प्रसन्न होइए ! श्वेतद्वीपान्तर में फणियों की मणिगणों से उज्जवल ऐसी शेष रूप उत्तम शय्या पर शयन कीजिये आपको नमस्कार है।"

आषाढ़ी पूर्णिमा को श्रीहंस भगवान् से लेकर समस्त आचार्य परम्परा सहित निज गुरुदेव का पूजन करना चाहिये। यह पूर्णिमा मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्य है। परंतु उसी भांति दोनों दिन मध्याह्न व्यापिनी हो तो पर दिन की पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिये; क्योंकि पहले ही श्रीनारद के वाक्य करके यह निर्णय हो चुका है।

श्रावण मास

उत्तम मुहूर्त में प्रथमा से आरंभ करके श्रद्धानुकूल दिनोंतक दोलोत्सव करे। 'बरगद के वृक्ष में बडी शाखा हो तो उसमें दोला बांधकर उत्सव करना' इत्यादि हरिवंशमें कहा है। वर्षा काल के समय भगवान् ने स्वयं दोलिकोत्सव किया था अतः उनका अनुकरण करने की आवश्यकता से यह सबको कर्तव्य है। विशेषकर श्रावण शुक्ल तृतीया से श्रावण शुक्ल एकादशी तक श्रीठाकुरजी को मनोरम हिण्डोरे में विराजमान कर पद गायन पूर्वक उत्सव करें।

श्रीनारद जी की आज्ञा है - श्रावण शुक्ला द्वादशी को श्रीभगवान् को पवित्रा धारण करावें।

श्रावण पूर्णिमा को रक्षाबंधन पर्व मनाया जाता है। भद्रा रहित व तीन मुहूर्त से अधिक उदयकाल व्यापिनी पूर्णिमा के अपराह्न अथवा प्रदोषकाल में रक्षाबंधन कर्त्तव्य है। सम्वत 2077 में अपराह्न दिन के 01 : 52 से 04 : 31 तक है तथा प्रदोषकाल रात्रि 21 : 19 तक है इसी दिन शुक्ल-कृष्ण-यजुर्वेदी द्विजों का श्रावणी कर्म सम्पन्न होता है।

भाद्रपद मास

श्रीनिम्बार्क पीठाधीश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी के पश्चात आचार्य पद पर स्वामी श्रीपरशु रामदेवाचार्य जी महाराज अभिषिक्त हुए। इनका समय पन्द्रहवीं शताब्दी है। ये बड़े ही प्रतिभा सम्पन्न उच्च कोटि के सिद्ध आचार्य थे। इनकी कीर्ति पताका तथा महिमा सर्वत्र फैली हुई थी। इन्होंने अपने श्री गुरुदेव के आदेश से परम पावन श्रीब्रजधाम को छोड़ कर मरुस्थल में पुष्कर क्षेत्र के समीप एक मस्तिंगशाह नामक यवन फकीर को परास्त कर वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

जहाँ पर आज कल श्री निम्बार्काचार्य पीठ स्थित है, वह स्थान आज से पांच सौ वर्ष पूर्व भयंकर बीहड़ वन था। उस जंगल में एक प्राचीन परम मनोहर अति सुन्दर जल पुष्प और लता वृक्षों से समन्वित आश्रम था, जिस आश्रम को एक पैशाचिक सिद्धि सम्पन्न दुष्ट एवं फकीर ने अपने आधिपत्य में ले लिया था। उस आश्रम के सन्निकट होकर ही द्वारका धाम जाने का प्रधान मार्ग था। यह मदान्ध फकीर उस मार्ग से जाने वाले भक्त यात्रियों को दुःख पहुँचाया करता था।

एक समय कुछ साधु सन्त महात्मा इसी मार्ग से द्वारका धाम को जा रहे थे। जब ये फकीर के निवास स्थान के सन्निकट पहुंचे तो फकीर ने इन सभी सन्तों को अपनी पैशाचिक सिद्धि के बल पर रोक लिया और विविध प्रकार का उनके साथ दुर्व्यवहार करते हुये तंग किया। जैसे-तैसे उस नर पिशाच से जान बचाकर वे वहां से लौट पड़े और मथुरापुरी में श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी महाराज के पास पहुँच कर उस यवन फकीर द्वारा किये गये दुष्कृत्य का सम्पूर्ण वृत्तान्त श्रवण कराया श्रीचरणों को यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ तब आपने अपने कृपापात्र शिष्य श्रीपरशुरामदेव जी को आज्ञा प्रदान कर वहां भेजा।

श्रीपरशुरामदेव जी ने वहां आकर अपनी वैष्णवी सिद्धि से उस यवन तांत्रिक का निवारण किया तथा इस स्थल को निष्कण्टक बनाकर पुनः गुरुदेव के पास पहुंचे। समय आने पर श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी ने आपको सर्वविध योग्य जानकर अपने पद का अधिकार तथा श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा देकर उ सी मरुस्थल में जाकर वैष्णव धर्म का प्रचार प्रसार करने की आज्ञा प्रदान की। तदननतर आपश्री ने यहाँ आकर आचार्यपीठ की स्थापना की और वैष्णव भक्ति का प्रसार किया। तबसे श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्यपीठ वहीँ स्थापित है। आपने विशाल परशुरामसागर नामक विशाल ग्रन्थ का निर्माण किया। आपश्री का जयन्ती महोत्सव भाद्रपद कृष्ण पञ्चमी को होता है।

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन श्रीमत्परममंगलरूप, गुणगणों के मन्दिर, परम वैष्णवों के उपास्य देव हैं उन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्मोत्सव परम उल्लास से मनावे। इस दिन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन सब को अपनी अपनी शक्ति के अनुसार उपवास (व्रत) करना चाहिये, भोजन नहीं करना चाहिये' स्कन्द पुराण में कहा है कि - 'जो जन जानकर भी श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत नहीं करते हैं वे वन में सर्प और व्याघ्र होते हैं। हे द्विजोत्तम ! जो मनुष्य कृष्ण जन्माष्टमी के दिन भोजन कर लेता है उसका वह भोजन नहीं है किंतु वह तीनों लोकों के पापको भक्षण करता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। '

प्रतिवर्ष श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् की प्रसन्नता के अर्थ रोहिणी नक्षत्र संयुक्त भाद्रपद कृष्णाष्टमी का व्रत करे। अग्निपुराण में कहा है कि -'आधी रात के उपरांत यदि सप्तमी हो तो जन्माष्टमी का व्रत नवमी में रोहिणी नक्षत्र न हो तो भी करे।

ब्रह्मवैवर्त में कहा है कि - 'सप्तमी सहित अष्टमी यत्नपूर्वक वर्जित करें और बिना रोहिणी नक्षत्र के नवमी सहित अष्टमी का व्रत करे अर्थात् सप्तमीयुत अष्टमी रोहिणी युक्त भी हो तो वह सदा त्याज्य है। स्कन्दपुराण में कहा है कि- 'हे विप्रेन्द्र ! पलमात्र भी सप्तमी से युक्त अष्टमी हो तो उसका त्याग करें जैसे कि - गंगाजल से भरा हुआ कलश मदिरा का एक बिंदु भी पड जाने से त्याग कर दिया जाता है। पद्मपुराण में कहा है कि - 'पूर्व (सप्तमी) से विद्ध अष्टमी नवमी के दिन सूर्योदय में मुहूर्त मात्र भी हो तो वह अष्टमी संपूर्ण होती है।' नवमी के दिन यदि कला, काष्ठा वा मुहूर्त मात्र भी अष्टमी तिथि हो तो वही अष्टमी ग्राह्य है; परंतु सप्तमी सहित अष्टमी भी ग्रहण नहीं करना चाहिये।

जिस प्रकार पंचगव्य स्वयं शुद्ध होने पर भी वह मद्य सहित होनेसे ग्राह्य नहीं होता है, उसी प्रकार सप्तमी विद्या अष्टमी रोहिणी सहित होने पर भी त्याज्य है। भविष्य पुराण में कहा है कि - शैव, सौर (सूर्य के उपासक), गाणपत्य, शाक्त और अन्य देवता उपासक, ये सब पूर्व-तिथि से विद्ध हुए व्रत करते हैं और कराते हैं; परंतु हे विप्र ! विष्णुव्रत पूर्वविद्ध हो तो कभी नहीं करावे। याज्ञवल्क्य जी कहते हैं कि - 'सम्पूर्ण अष्टमी अर्धरात्रि में हो और रोहिणी भी यदि प्राप्त होवे तो उस दिन यत्नसे व्रत करे पूर्वविद्धा अष्टमीका त्याग करे।'
विष्णुधर्ममें कहा है कि - 'भाद्रपद मास की कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि में रोहिणी नक्षत्र हो तो वह जयन्ती नाम वाली जन्माष्टमी कहलाती है।' रोहिणी नक्षत्र सहित भाद्रपद कृष्ण अष्टमी मात्र भी मिले तो उसका ही व्रत करे क्योंकि वही महाफल देनेवाली है। शुद्ध अष्टमी का अभाव हो तो केवल नवमी में ही जन्माष्टमी का अनुष्ठान करे। पद्मपुराणमें कहा है कि - 'अष्टमी तिथि का क्षय हो अथवा सप्तमी विद्धा अष्टमी हो तो नवमी में व्रत करे।
श्रीनिम्बार्काचार्य जी ने व्रतोतसव में "कपालवेध" को स्वीकार किया है अर्थात् पूर्व तिथि 45 घटी से पल मात्र भी अधिक हो तो उत्सव की तिथि का वेध कर लेती है तब उस वेधित तिथि को त्यागकर अगली तिथि में व्रतोत्सव करना चाहिये। अतः सप्तमी तिथि 45 घटी से पल मात्र भी अधिक होजाये तो उस अष्टमी का त्याग करके नवमी तिथि को इस महामहोत्सव का आयोजन करें ।

पारणा निर्णय - श्रीनिम्बार्काचार्य जी का मत है कि - उत्सव के अन्त में पारण का प्रमाण है, श्रीमत्सनकादिकों ने कहा है कि -'व्रती पुरुष तिथि के या उत्सवके अन्तमें पारण करे।' तथा वायुपुराण में भी कहा है कि जो सम्पूर्ण पापों के नाश की इच्छा हो, तो हे विप्र ! उत्सव के अन्त में भगवान् के प्रसाद का अन्न पावे।

दधिकांदो श्रीमदाचार्य के वाक्य अनुसार - 'माखन, दही, मट्ठा, हलदी आदि पदार्थों को जल विना मिला कर परम वैष्णव जन समेत आनन्द पूर्वक परस्पर छिडकें। और नंदराय तथा यशोदाजी के यहाँ मानों गोप-गोपस्त्रियां आती हैं इत्यादि लोक सिद्ध रीति से कल्पना करके बधाई गान, उछाल दधिकांदौं आदि उत्सव सम्पन्न करें।

श्रीवृन्दावनवल्लभ की भक्ति करने वाले वैष्णव जनों को आनंददायिनी जगज्जननी श्रीकृष्ण का मन हरने वाली परम आह्लादिनी श्रीराधिका जी का जन्म भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन हुआ है। भविष्योत्तर में कहा है - 'भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष में जो पुण्यदायी अष्टमी तिथि है उस दिन कृष्ण भक्तों को श्रीराधाजी के जन्म का उत्सव करना चाहिये।' श्रीमदाचार्य ने भी कहा है कि- अष्टमी में श्रीराधाजन्म का महोत्सव श्रीकृष्णजन्माष्टमी के जन्मोत्सव से भी बहुत प्रेम के साथ करना चाहिये। यह व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष की अष्टमी शुद्ध हो उस दिन करे। वह भक्ति को बढाने वाली है। नवमी से विद्ध हुई अष्टमी में व्रत करे और सप्तमी युक्त अष्टमी को वर्जित करे। सर्व व्रत में अधिक पुण्यवाली द्वादशी (एकादशी) है, जो कृष्ण को बहुत प्यारी है; उससे भी अधिक प्यारी श्रीभगवान् को जन्माष्टमी है। और उससे भी परम् प्यारी श्रीराधा जी की जन्माष्टमी है। इस कारण मनुष्य को यह श्रीराधाष्टमी व्रत अवश्य ही करना चाहिये। ऐसी भविष्योत्तर की उक्ति है इसलिये उपवास की आवश्यकता होने उपवास पूर्वक उत्सव करे, केवल उत्सव मात्र नहीं।
श्रीअलिमाधुरी कुटी बनविहार रमणरेती में श्रीराधा प्राकट्य लीला आयोजन होता हैं। वाणी ग्रन्थों के अनुरूप लीला आयोजन श्रीधाम के सन्त समाज में अत्यन्त ख्याति प्राप्त हैं तथा इस लीला में सम्मिलित होना सौभाग्य समझा जाता है।

भाद्रशुक्ल एकादशी के दिन कटिदानोत्सव करें। 'भाद्रपद मासके शुक्ल पक्ष में एकादशी के दिन महापातकों का नाश करने वाला श्रीविष्णु का काटिदानोत्सव करे। मंत्र यह है कि - हे देवदेव ! हे जगन्नाथ ! हे योगीगम्य लक्ष्मीपति भगवान् ! श्रेष्ठ भाद्रपद मास में आजके दिन कटिदान (कटीसूत्र का दान) कीजिये। अनंतर जलयानों में भगवान् को क्रीडा कराकर फिर मन्दिर में लावे।' ऐसा भविष्योत्तर पुराण का कथन है।

भाद्रपद में शुक्ल द्वादशी के दिन अभिजित् मुहूर्त में अर्थात् श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद में ग्रह नक्षत्र तारा आदि अनुकूल होने पर श्रीवामन भगवान् का अवतार हुआ। इस दिन श्रवण नक्षत्र हो तो वह विजया महाद्वादशी कहलाती है। श्रीसनकादिकों की आज्ञा है कि - भाद्रपद शुक्ला द्वादशी श्रवण युक्त हो तो उसे महाद्वादशी समझें, एकादशी तथा द्वादशी दोनों दिन उपवास करें। यहाँ विधि का लोप नहीं समझना चाहिये, क्योंकि दोनों के देवता एक ही है। अतः एकादशी व्रत की समाप्ति का पारणा किये बिना द्वादशी का व्रत कर सकते है। द्वादशी को मध्याह्न में वामन भगवान् के आविर्भाव का उत्सव मनावें। पञ्चामृत से महास्नान करवाकर महाभोग समर्पण करें। वैष्णवों को निमंत्रित कर गायनवादन आदि द्वारा श्रीवामन जयंती उत्सव मनावें प्रसाद वितरण करें।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी में अनन्तोत्सव करें। वह पूर्व विद्धा अधिक हो और पर दिन में किंचिन्मात्र हो तो पर दिन में करें।

आश्विन मास

आश्विन कृष्ण प्रतिपदासे शुक्ल प्रतिपदा पर्यन्त श्राद्ध काल कहलाता है। जो तिथि जिसके पिता के/पितामह/प्रपितामह – माता/ मातामही / प्रमातामही के मृत्यु दिन की हो, वह तिथि पितृपक्ष में यत्नपूर्वक पूजनीय है अर्थात् उसी दिन उनके निमित्त श्राद्ध करना चाहिये। यदि शुद्ध एकादशी पितृ तिथि हो, तो द्वादशी में श्राद्ध करे और यदि विद्ध एकादशी पितृतिथि हो तो द्वादशी में व्रत करे और त्रयोदशी के दिन एकादशी तथा द्वादशी के निमित्त श्राद्ध करे।

सांझी उत्सव – आश्विन कृष्णा द्वितीया से लेकर अश्विन शुक्ल द्वितीया तक यह उत्सव करें। सायंकाल में विभिन्न पुष्प पल्लव से सांझी की रचना करें। पुष्प, अबीर, गुलाल आदि से श्रीधाम की विभिन्न लीलाओं का चित्रण करें।

पुरषोत्तम (अधिक) मास आरम्भ शास्त्रों के अनुसार हर तीसरे साल सर्वोत्तम यानी पुरुषोत्तम मास की उत्पत्ति होती है। इस मास के जप, तप, दान से अनंत पुण्यों की प्राप्ति होती है। इस मास में श्रीकृष्णह्श्रीमद्भगवतगीता, श्रीराम कथा वाचन और विष्णु भगवान् की उपासना की जाती है।
इस वर्ष 2077 विक्रमी में प्रथम आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से द्वितीय आश्विन कृष्ण अमावस्या तक पुरषोत्तम मास रहेगा।

शारदीय नवरात्रारम्भ द्वितीय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा शनिवार दिनांक 17 अक्टूबर 2020 ई० को शारदीय नवरात्र आरम्भ होंगे। दिन में 11 – 51 से 13 – 13 तक घटस्थापना होगी। आश्विन शुक्ल में मूल नक्षत्र में सरस्वती स्थापन करें। पूर्वाषाढा नक्षत्र में सरस्वती की पूजा करें और उस दिन से जब तक श्रवण नक्षत्र हो, तब तक प्रतिदिन देवी की पूजा करे। विद्या की कामना वाला द्विजोत्तम सरस्वती की स्थापन से विसर्जन तक न पढ़े न पढ़ावे, और न लिखे।
आश्विन शुक्ल दशमी को विजया उत्सव करे। दशमी तिथि को अपराह्न में जिस दिवस श्रवण नक्षत्र हो उसी दिवस विजयादशमी मनानी चाहिये। जब पर दिन केवल दशमी किंचित् वृद्धिगत हो तब विजया का पूजन पूर्व दिन में ही प्राप्त होता है और श्रीभगवान् का उत्सव पर (दूसरे) दिन में ही करें। पूर्वविद्धा दशमी में शमी वृक्ष की पूजा सुदर्शनादि आयुध पूजन करें और परविद्धा में श्रीभगवान् का अभ्यंगादि महोत्सव सम्पन्न करें।
श्रीमदाचार्य कहते हैं कि - 'श्रीरघुनाथजी को रथ में बिठाकर समस्त शस्त्र - अस्त्रों सहित अपने नगर की सीमा से आगे तक ले जाये। वहाँ रावण विजय स्वरुप रावण वध लीला करें। फिर श्रीजानकी जी और श्रीलक्ष्मण जी सहित पुनः मन्दिर में आवें। भगवान् का भोग नैवैद्य सभी भक्तसमुदाय को देवें।
इस वर्ष श्रीविजयादशमी निमित्त श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा, शमी पूजन, आश्विन शु० नवमी 25 अक्टूबर 2020 को तथा श्रीविजयादशमी निमित्त श्रीराम रथयात्रा, आश्विन शु० दशमी 26 अक्टूबर 2020 होंगे।

आश्विन पूर्णिमा को रासोत्सव करे जिसको शरदपूर्णिमा कहते हैं। आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को मुख्य मान के अर्थात् उसी दिन इस उत्सवका अधिकार है ऐसा मानकर नारद पुराणमें कहा है - 'हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! जो रासलीला महोत्सव करता है उसके मन में जब तक इन्द्र का राज्य है तब तक श्रीकृष्ण भगवान् परम भक्ति देते हैं।' वह पूर्णिमा विद्ध होकर अधिक हो तो पर दिन में करे। 'चतुर्दशी से विद्ध हुई अमावस्या और पूर्णिमा व्रतको कभी ग्रहण नहीं करे, यह ब्रह्मवैवर्तमें कहा है। पूर्वविद्ध दिन में जो कुछ दान अथवा पूजन किया जाता है तो उस दिनमें किये हुए दान और पूजनको भगवान् नहीं ग्रहण करते हैं।' ऐसी नारदजी की उक्ति है। उदय समय में जो तिथि एक कलामात्र भी हो वही तिथि पूरे दिन व्याप्त मानी जाती है।

कार्तिक मास

कार्तिक मास श्रीकृष्ण भागवान को अत्यधिक प्रिय है। जो मनुष्य कार्तिक मास में व्रत नहीं करता है वह ब्रह्महत्यारा, वही गोघाती, स्वर्ण चुराने वाले, और महाझूठे के समान पापी है जो गृहस्थ कार्तिक मास में व्रत नहीं करता है उसके इष्ट पूर्तआदि सब कर्म नाश हो जाते हैं और जब तक पांचभौतिक जगत स्थित रहता है तब तक वह नरक में वास करता है। संन्यासी हो, अथवा विधवा हो, अथवा अनाश्रमी (बालक) क्यों न हो, ये वैष्णव होने पर कार्तिक में व्रत न करें तो वे नरक को अवश्य जाते हैं। अतः कार्तिक मास में स्नान दान ध्यान आदि नियम पूर्वक करें।

श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी महाराज श्रीनिम्बार्काचार्य परम्परा में 35 वीं संख्या में आचार्य पीठासीन थे। आपके संस्कृत एवं ब्रज भाषा में विरचित अनेक ग्रन्थ हैं। जिनमें संस्कृत में वेदांतदशश्लोकि का भाष्य सिद्धान्तरत्नांजलि तथा ब्रजभाषा में "महावाणी" प्रधान ग्रन्थ है। यह महावाणी श्री श्रीभट्टदेवाचार्य जी कृत श्री युगल शतक का मानों वृहद् भाष्य ही है। श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी महाराज विशेषतया मथुरा में नारद टीला पर निवास किया करते थे। अधिक समय तो आप लोक कल्याणार्थ भ्रमण में ही रहा करते थे। भ्रमण काल में वैष्णव धर्म का आपने सर्वाधिक प्रचार - प्रसार वैष्णव धर्म की विजय वैजयन्ती फहराई। शरणागत जनों को जहां–तहाँ पञ्चसंस्कार पूर्वक वैष्णवी दीक्षा देकर परमार्थ की ओर अग्रसर करते भगवद्भक्ति का प्रचार करना ही आपका मुख्य लक्ष्य था। आपश्री के द्वादश प्रमुख प्रतापी शिष्य थे जिन से सम्प्रदाय में 12 प्रमुख गादियाँ स्थापित हुई जो द्वादश द्वारे कहलाते हैं। आपश्री का पाटोत्सव कार्तिक कृष्णा 12 को मनाया जाता है।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को श्रीधन्वन्तरि भगवान् का पूजन करें। संध्या समय धर्मराज के निमित्त धृत दीपक प्रज्वलित करें।
कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को प्रातःकाल तैलाभ्यंग करके स्नान करें तथा रात्रि को दीप दान करें।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को संध्या के समय प्रदोषकाल में लक्ष्मी पूजन दीपोत्सव करें।
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को श्रीगिरिराज - गोवर्धन, श्रीगोविन्द और गौ का पूजन करें। नाना प्रकार के व्यञ्जन सिद्ध करके पूजन नैवेद्य भोग लगाकर भक्तसमुदाय को प्रसाद वितरित करें।

कार्तिक शुक्ल अष्टमी गोपाष्टमी कहलाती है। उस दिन श्रीकृष्ण जी गौ और बछड़ों की रक्षा करनेवाले गोप हुए। उस दिन सम्पूर्ण कामनाओं को चाहने वाला पुरुष गौमाता की पूजा करे। गौवों को ग्रास देवै, प्रदक्षिणा करै, और गौओ के पीछे २ चले।' श्रीमदाचार्य ने कहा है - 'कार्तिक शुक्ल अष्टमी के दिन श्रेष्ठ सज्जनों को बुलाकर श्रीकृष्ण के समान शृंगारपूर्वक श्यामसुन्दर वेष बनाकर, यशोदा, नन्द, गोप और गोपालवाल इनको यथायोग्य बनाकर गोप कुमार के साथ और बलदेव समेत श्रीकृष्णचन्द्रजी को नन्दजीकी आज्ञासे यशोदाजी का दिया हुआ चार प्रकार का अन्न लेकर गौवों के चराने निमित्त वन को जाये। अनन्तर दिनभर लीलापूर्वक क्रीडा करे। संध्या समय में श्रीकृष्ण भगवान् को प्रसन्न करते हुए अपने घर आकर स्नानपानादिक कर, स्नानानन्तर बालकृष्ण को विधिपूर्वक शयन करा देवें और प्रसाद आदिसे पूजन (सत्कार) करते हुए वैष्णव जन को प्रसन्न करे।

कार्तिक शुक्ल अष्टमी को श्रीस्वभूरामदेवाचार्यजी का जयन्ती महोत्सव होता है। आप श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी के द्वादश प्रमुख शिष्यों में अत्यन्त प्रतापी शिष्य थे। हरियाणा के बूडिया नामक ग्राम में आपका जन्म हुआ था। माता पिता ने श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के चरणों में आपको समर्पित कर दिया था। गुरुदेव से वेद – वेदांग तथा रसोपासना की शिक्षा प्राप्त कर उन्ही के आदेशानुसार धर्म तथा समाज के रक्षार्थ अपना जीवन समर्पित किया। आपने मुस्लिम आक्रान्ताओं से त्रस्त हरियाणा की जनता को अभय प्रदान कर वहीँ निवास किया। हरियाणा में आपका अत्यधिक सम्मान तथा प्रभाव रहा। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में श्रीस्वभूरामदेवाचार्य जी के द्वारे के स्थान तथा शिष्य परम्परा का सर्वाधिक प्रसार विस्तार है।

कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी अक्षय नवमी कहलाती है। सतयुग प्रवर्तन इसी तिथि को होने से यह युगादि तिथि कहलाती है। श्रीहंस भगवान्, श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं श्रीसनकादिक महर्षि गण का प्राकट्य महोत्सव भी इस तिथि को होता है।
अनन्तकोटि – ब्रह्मांड नायक, करुणा-वरुणालय, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार श्रीहरि के मुख्य 24 अवतारों में श्रीहंस भगवान् भी एक अवतार हैं। आपका प्राकट्य सत्ययुग के प्रारम्भ काल में युगादि तिथि कार्तिक शुक्ल नवमी (अक्षय नवमी) को हुआ है। ब्रह्माजी की विनीत प्रार्थना पर "ऊर्जे सिते नवम्यां वै हंसो जातः स्वयं हरि" कार्तिक शुक्ला नवमी को स्वयं भगवान् श्रीहरि ने हंसरूप में अवतार लिया। भगवान् ने हंसरूप इसलिए धारण किया कि जिस प्रकार हंस नीर-क्षीर (जल और दूध) को पृथक् करने में समर्थ है, उसी प्रकार आपने भी नीर-क्षीर विभागवत् चित्त और गुणत्रय का पूर्ण विवेचन कर परमोत्कृष्ट दिव्य तत्व साथ-साथ पंचपदी ब्रह्मविद्या श्रीगोपाल मंत्र का श्रीसनकादि महर्षियों को सदुपदेश कर उनके संदेह की निवृत्ति की।
यह प्रसङ्ग श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध अध्याय 13 में श्रीकृष्णोद्धव संवाद रूप से विस्तार पूर्वक वर्णित है। भगवत्परायण, बाल - ब्रह्मचारी, सिद्धजन, तपोमूर्ति ये चारों भ्राता सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्मदेव के मानस पुत्र हैं। इन चारों के नाम हैं -सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार। इनके उत्पन्न होते ही श्रीब्रह्मा जी ने सृष्टि विस्तार की आज्ञा दी, पर इन्होंने प्रवृत्ति मार्ग को बंधन जानकर परम श्रेष्ठ निवृत्ति मार्ग को ही ग्रहण किया। श्री सनकादि मुनि जन निवृति धर्म एवं मोक्ष मार्ग के प्रधान आचार्य हैं। पूर्वजों के पूर्वज होते हुये भी ये पाँच वर्ष की अवस्था में रहकर भगवद्भजन में ही संलग्न रहते हैं। श्रीहंस भगवान् ने कार्तिक शुक्ल नवमी को श्रीसनकादि महर्षियों की जिज्ञासा पूर्ति कर उन्हें श्रीगोपाल तापिनी उपनिषद् के परम दिव्य पंचपदी विद्यात्मक श्रीगोपाल मन्त्रराज का गूढतम उपदेश तथा अपने निज स्वरुप सूक्ष्म दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित शालिग्राम अर्चा विग्रह प्रदान किये जो श्रीसर्वेश्वर के नाम से व्यवहृत हैं। श्रीसर्वेश्वर प्रभु इन्हीं के संसेव्य ठाकुरजी है।
श्रीसनकादिक संसेव्य श्रीसर्वेश्वर भगवान् गुन्जाफल सदृश अति सूक्ष्म श्री शालिग्राम श्रीविग्रह हैं। इसके चारों ओर गोलाकार दक्षिणावर्तचक्र और किरणें बड़ी ही तेजपूर्ण एवं मनोहर प्रतीत होती हैं। मध्य भाग में एक बिन्दु है और उस बिन्दु के मध्य भाग में युगल सरकार श्रीराधाकृष्ण के सूक्ष्म दर्शन स्वरूप दो बड़ी रेखायें हैं। यह श्रीसर्वेश्वर भगवान् की प्रतिमा श्रीसनकादिकों ने देवर्षि श्रीनारदजी को प्रदान की थी और श्रीनारदजी ने भगवान् श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्र को। इस प्रकार ये श्रीसर्वेश्वर भगवान् की शालिग्राम प्रतिमा क्रमशः परम्परागत अद्यावधि अ. भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्कतीर्थ में विराजमान है। जब श्रीआचार्यचरण धर्म - प्रचारार्थ अथवा भक्तजनों के परमाग्रह पर यत्र – तत्र पधारते हैं, तब यही श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा साथ रहती है। श्रीसर्वेश्वर प्रभु समस्त श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परमोपास्य इष्टदेव हैं।

कार्तिक मास की शुक्ल एकादशी का नाम प्रबोधिनी है। वराह पुराणमें कहा है कि-' कार्तिक के शुक्लपक्ष में जो एकादशी कही है वह साक्षात् हरिभक्तिको बढ़ाती है। उसका प्रबोधिनी नाम विख्यात है। कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन शयन करते हुए भगवान् को शुद्ध भक्ति सहित जगावे। रात्रि में स्नानादि करके भगवान् का अभिषेक कर नैवैद्य अर्पित करें, नृत्य गीत तथा वाद्य और ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के मंगल वचनों से और वीणा और पणवके शब्दोंसे, पुराणके श्रवणसे, भगवत्सम्बन्धी कथाओंसे और विष्णुजीके स्तोत्रोंसे भगवान् को जगावे।

कार्तिकी पूर्णिमाको भगवद्दीपोत्सव करे।
इस पूर्णिमा को ही श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जी का आविर्भाव हुआ था। निखिलभुवनमोहन सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की मंगलमयी पावन आज्ञा शिरोधार्य कर चक्रराज श्रीसुदर्शन ने द्वापर अंत में इस धराधाम पर भारतवर्ष के दक्षिण में महर्षिवर्य श्रीअरूण के पवित्र आश्रम में माता जयन्तीदेवी के उदर से श्रीनियमानन्द के रूप में अवतार धारण किया। अल्पवय में ही माता जयन्ती तथा पिता महर्षि अरूण के साथ उत्तर भारत में व्रजमण्डल स्थित गिरिराज गोवर्धन की सुरम्य उपत्यका तलहटी में निवास कर श्रुति–स्मृति–सूत्रादि विविध विद्याओं का सांगोपांग विधिवत अध्ययन किया। पितामह ब्रह्मा जी एक दिवा भोजी यति के रूप में सूर्यास्त के समय आपके आश्रम पर उपस्थित हुए। विविध शास्त्रीय चर्चाओं के अनन्तर जब श्रीनियमानन्द प्रभु ने यति से भगवत प्रसाद लेने का आग्रह किया तो यति ने सूर्यास्त का संकेत करते हुए अपने दिवाभोजी होने का संकल्प स्मरण कराया। समागत अतिथि के अभुक्त ही चले जाने से शास्त्र आज्ञा की हानि होते देख श्रीनियमानन्द ने अपने सुदर्शन-चक्र स्वरुप के तेज को समीपस्थ निम्बवृक्ष पर स्थापित कर दिवभोजी यति को सूर्य रूप में दर्शन कराकर भगवदप्रसाद पवाया। यति ने ज्यों ही आचमन किया तो भान हुआ की एक प्रहर रात्रि व्यतीत हो चुकी हैं। इस महान विस्मयकारिणी घटना को देखकर ब्रह्माजी ने वास्तविक रूप में प्रकट होकर श्रीनियमानन्द को स्वयं द्वारा परीक्षा लिया जाना बतलाकर निम्ब वृक्ष पर अर्क (सूर्य) के दर्शन कराने के कारण श्रीनिम्बार्क नाम से सम्बोधित किया। और भविष्य में इसी नाम से विख्यात होने की घोषणा की। तब से श्रीनियमानन्द प्रभु का नाम श्रीनिम्बार्क प्रसिद्द हुआ। इसी आश्रम में आपको देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी से वैष्णवी दीक्षा में वही पंचपदी विद्यात्मक श्रीगोपालमन्त्रराज का पावन उपदेश तथा श्रीसनकादि संसेवित श्रीसर्वेश्वरप्रभु की अनुपम सेवा प्राप्त हुई। श्रीनारद जी ने श्रीनिम्बार्क को श्रीराधाकृष्ण की युगल उपासना एवं स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धांत का परिज्ञान कराया और स्वयं - पाकिता एवं अखंड नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रतादि नियमों का विधिपूर्वक उपदेश किया। यही मंत्रोपदेश - सिद्धांत, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा तथा स्वयं-पकिता का नियम और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य के पालन पूर्वक आचार्य परम्परा अद्यावधि चली आ रही है। आपने प्रस्थानत्रयी पर भाष्य रचना कर स्वाभाविक द्वैताद्वैत नामक सिद्धान्त का प्रतिष्ठापन किया।
वृन्दावननिकुंजविहारी युगलकिशोर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की श्रुति-पुराणादि शास्त्रसम्मत रसमयी मधुर युगल उपासना का आपने सूत्रपात कर इसका प्रचुर प्रसार किया। कपालवेध सिद्धान्तानुसार विद्धा एकादाशी त्याज्य एवं शुद्धा एकादाशी ही ग्राह्य है भगवद्जयन्ती आदि व्रतोपवास के सन्दर्भ में यही आपश्री का अभिमत सुप्रसिद्ध है। सम्प्रदाय के आद्य-प्रवर्तक आप ही लोक विश्रुत हैं।

मार्गशीर्ष मास

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीताजी में स्वयं कहा है कि "मासानां मार्गशीर्षोऽहं" अतएव वर्ष का आरम्भ मार्गशीर्ष से भी माना जाता है। यह माह अत्यंत पवित्र है। श्रीमत्कुमार कहते हैं - मार्गशीर्ष माह जो परम पवित्र है, उसमें यत्नपूर्वक तुलसी के पवित्र वनमें जाकर परम भक्तिसे भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करें । वहाँ प्रसन्नानन हो के वैष्णवों को गीतादि, पुष्प, ताम्बूल, आदि सहित सज्जनानन्दवर्धन महोत्सव करना चाहिये।

सेतुकाकार श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव - श्रीदेवाचार्य जी महाराज के पट्टशिष्य निम्बार्क सम्प्रदाय के 17 वे आचार्य श्रीसुन्दरभट्टाचार्य जी महाराज वेदान्त के उद्भट्ट विद्वान थे। आपने अनेक वेदान्त सिद्धान्त तथा उपासना परक ग्रन्थों की रचना करी। आपके तीन ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध होतें है - 1. 'सेतुका' जोकि आपने निजगुरुदेव श्री श्रीदेवाचार्यद्वारा रचित ब्रह्मसूत्रों के भाष्य की विस्तृत व्याख्या है। जिसकी मात्र प्रथम तरंग ही उपलब्ध है। 2. 'प्रपन्न सुरतरु मञ्जरी' (प्रपन्न कल्पवल्ली की विस्तृत टीका) 3. 'मन्त्रार्थरहस्य' (रहस्य षोडशी की व्याख्या) इनके अलावा श्रीगोपालोपनिषद् का भाष्य, कालनिर्णय सन्दर्भ तथा प्रपन्नवृत्ति-निर्णय सन्दर्भ ये तीनों ही ग्रन्थ अनुपलब्ध है। अष्टादश भट्टाचार्यों की परम्परा आप ही से आरम्भ हुई है। आपका पाटोत्सव मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है।

श्रीउद्धवघमण्डदेवाचार्यजी प्राकट्योत्सव - आप श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी के शिष्यों में अत्यन्त भजनानन्दी प्रसिद्ध थे। अपने आराध्य पर भरोसा और उनकी कृपा बल से वे हमेशा गर्व में रहते। यही कारण था कि वे समाज में घमंडी नाम से विख्यात हुए। एक बार करहला दर्शनों के लिए आए श्रीघमंडदेव जी यहीं निवास करने लगे। स्वयं युगल सरकार ने इन्हें प्रकट होकर ब्राह्मण बालकों को लेकर रासलीलानुकरण आरम्भ करने का आदेश दिया था। इसके लिए श्रीघमंडदेव जी को श्रीयुगल सरकार ने अपने मुकुट और चंद्रिका प्रदान की। आपका प्राकट्योत्सव मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है।

ठाकुर श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज का प्राकट्योत्सव- मार्गशीर्ष शु० पञ्चमी का शुभ अवसर है। घर - घर में प्रेम की पताका फहरा रही है और सभी स्थान तोरण-वंदनवारों से सुशोभित हो रहे हैं। विविध भाँति की द्रुमवेलियों से प्रफुल्लित ऋतुराज भी मानों बधाई देने आये हैं। नगर-नगर, बगर -बगर में महामंगलमय महोत्सव हो रहे हैं। यावत् नरनारी, खग-मृग, पशु-पक्षी, स्थावर-जंगम, सरित - समुद्र, आकाश - पाताल दशों दिशाओं में यत्र-तत्र सर्वत्र अनुराग ही अनुराग छाया हुआ है। छाये भी क्यों न! जबकि अखिलरसामृतमूर्ति, सकल-सौंदर्य माधुर्य-निकेतन श्रीनिकुञ्जविहारी ही स्वेच्छा से श्रीविग्रह धारण कर इस धराधाम पर श्री निधुवन- राज में आविर्भूत हुए हों। श्रीबिहारी जी के प्राकट्य का यह समाचार चारों ओर प्रसारित हो गया। समस्त रसिक समाज एवं नर नारी मंगल-महोत्सव मनाते हुये दर्शनों को लालसा से रसिक सम्राट् की कुञ्जकुटीर श्रीनिधुवनराज में आये। उनकी दर्शनाभिलाषा को अति उत्कट देख श्री स्वामी जी महाराज अति प्रसन्न हो सबको साथ लेकर कुञ्जकुटीर लतामन्दिर में आए। वहां कोटि काम लावण्य त्रिभंग ललित छवि छटा को देख सब के सब जके-थके से रह गये और जयजयकार करने लगे। ऐसी मनोहर रूप-माधुरी के दर्शन कर यावत् रसिक समाज को ऐसी

प्रसन्नता हुई मानों किसी रंक को पारस मिल गया हो। प्रथम तो अनूप रूप माधुरी ने ही मन प्राण हर लिये, और फिर सुकुमारता को देख तो सबके सब अपने आपको ही बिसरा बैठे। श्रीस्वामीजी महाराज श्रीबिहारीजी की सेवा स्वयं करते थे। श्रीबिहारीजी अपने सिंहासन पर द्वादश मुहर नित्य प्रकट करते थे जिनसे विविध भाँति के व्यञ्जनों का भोग श्रीबिहारीजी को लगाया जाता और प्रसाद को श्रीवृन्दावन के जीव-जंतुओं में वितरित कर दिया जाता।

श्रीमोक्षदा एकादशी व्रत एवं श्रीगीता जयन्ती मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन कुरुक्षेत्र में भगवान् ने अर्जुन को युद्धकाल में मोह होने पर श्रीगीताजी का उपदेश किया।

मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी श्रीव्यंजन द्वादशी कहलाती है, विभिन्न प्रकार के व्यञ्जन सिद्ध करके श्रीठाकुर जी के भोग लगावें। इसी दिन श्रीनारद जयन्ती होती है, भक्ति-ज्ञान-वैराग्य प्रभृत्ति समस्त साधनों का समस्त लोकों में घूम-घूमकर प्रचुर प्रचार प्रसार करने वाले कीर्तन कला विशेषज्ञ वीणाधर देवर्षिवर्य श्रीनारद जी महाराज के नाम को कौन नहीं जनता। आपका पर दुःख दुखित्व भाव बहुत प्रसिद्ध है। भगवत्कृपा से आपकी सर्वत्र अबाध गति है। आप सभी जीवों पर समान भाव रखते हुए सबका हितचिन्तन किया करते है। आपने श्रीहंस वंशावतंस श्रीसनत्कुमारजी से पञ्चपदी ब्रह्मविद्या अष्टादशाक्षरी श्रीगोपाल मन्त्रराज की दीक्षा ग्रहण करके लोक में सर्वत्र वैष्णव धर्म की विजय पताका फहराई। ध्रुव-प्रह्लाद आप ही के कृपा पात्र थे। दक्ष प्रजापति के हर्यश्व एवं सबलाश्व नामक सहस्त्राधिक पुत्रों को दिव्योपदेश प्रदान कर सृष्टि रचना विषयक कर्म बन्धन से छुड़ाकर निवृत्ति पथ परायण बनाया। इसी प्रकार राजा प्राचीन बर्हि को भी हिंसात्मक कर्मों की ओर से हटाकर भगवदभक्ति की ओर प्रवृत्त किया। आचार्य पंचायत में आपका क्रम तीसरा है। ब्रजमंडल में आकर श्री गोवर्धन के समीप श्रीअरुणाश्रम में श्रीचक्रसुदर्शनावतार श्रीनियमानन्द (श्री निम्बार्क) को आपने ही श्रीसनकादि मुनिजनों द्वारा सम्प्राप्त पञ्चपदी ब्रह्मविद्या श्रीगोपालमन्त्रराज की दीक्षाप्रदान कर श्रीसनकादि संसेव्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान की। आपके नारदपञ्चरात्र तथा श्रीनारद भक्ति सूत्र भक्त वैष्णवों की अमूल्य निधि है।

पौष मास

मकर संक्रान्ति पुण्यं 14 जनवरी 2020 को प्रातः 08 - 16 से

मकर संक्रान्ति का निर्णय - 'अतीत और अनागत जो उत्तरायण और दक्षिणायन उसमें तीस घडी कर्क की और बीस घडी मकर की पुण्य काल की कही है' ऐसा वृद्धवशिष्ठका वचन है। रात्रि में मकर संक्रांति हो तो पर दिन में सूर्योदय के उपरान्त दिनके पूर्वभाग में अर्थात् दोपहर तक पुण्यकाल होता है। उसी को भविष्योत्तर में कहा है -'प्रदोष वा अर्धरात्रि के समय यदि धनु राशि छोडकर मकर राशि पर सूर्य आये तो परदिन में स्नान दान करे' इस प्रकार पर दिन में पुण्यकाल कहने पर भी दिनके पूर्वभाग में ही पुण्यकाल सिद्ध हुआ। क्योंकि- आसन्न संक्रमण का पुण्य दिनार्ध तक स्नान दान का है ऐसा वचन है।

पौष मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी को माघ स्नान का प्रारंभ करनेको कहा है। ब्रह्मपुराणमें कहा है 'पौषमास में शुक्ल पक्ष की एकादशी से माघ स्नान का प्रारंभ कर माघ मास में शुक्लपक्ष की द्वादशी वा पूर्णिमा को उसकी समाप्ति करे। पौषमास में शुक्लपक्ष की द्वादशी को

हरि भगवान् की पूजा करे। यही श्रीसनत्कुमारोंने कहा है, कि - ' पौष मास में शुक्ल पक्षकी द्वादशी के दिन विधिपूर्वक देवदेव जनार्दन भगवान् का पूजन से आराधन करे।' इस प्रकार पौष मासका कृत्य है।

माघ मास

श्रीनारद जी का कथन है – वैष्णवों का अतिप्रिय माघ मास ऋषि मुनि और देवताओं के लिए भी बड़ा दुर्लभ है। हे शचीनाथ ! समस्त मासों में माघ मास भगवान् को विशेष प्रिय है। पद्मपुराण में भगवान् के वचन हैं कि – 'माघस्नान से बढ़कर पापनाशक और कोई तप नहीं हैं।' माघ मास की द्वादशी के दिन विशेष रूप से पुष्प मण्डप बनावें, श्रीभगवान् की तुष्टि के लिए विविध भांति का नैवेद्य भोग लगावें फिर वैष्णवों का सन्मान करेंतो सर्वविध प्रकार से भगवान् प्रसन्न होतें हैं।

माघ शुक्ल पञ्चमी के दिन विद्या की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती का पूजन करें।

श्रीवसन्तोत्सव माघ शुक्ल पञ्चमी के दिन प्रातः स्नानादि करके सेवा में जायें। गंध पुष्प जलादि से भगवान् का पूजन करके महास्नान करावें। मनोरम पीत वस्त्रों से श्रृंगार करें। बिछायत, पिछवाई चंदोवा सभी पीत रंग के सजावें। सिंहासन के निकट हल्दी रोली से स्वस्तिक बनावे, उस पर एक थाल रखें, उसमें एक कलश और उसपे एक छोटा कलश और रखे (शिखराकार)। उन दोनों कलशों के बीच में हरित यावान्कुंर, आम्र मञ्जरी, सरसों के पीले पुष्प तथा दूर्वा आदि रखें। कलश में सुपारी मुद्रा अर्पण करें। थाल में दो श्रीफल रखें। तिलक अक्षत लगावें। सिंहासन के समीप केशर कपूर कस्तूरी चन्दन चौवा के कटोरे एवं गुलाल पचरंगी अबीर रखें। थाल में रखे हरिद्रा कुमकुम से ठाकुरजी के तिलक अक्षत करें, हरित यवांकुर आम्र मन्जिरी पाग में धारण करावें। पोशाक पर केशर छिडके, कपूर की रज उडावे। नैवेद्य में भी अधिकाधिक पीले व्यंजनों का क्रम रखें और भोग लगावें। अनन्तर भगवत प्रसादी वितरित करके उत्सव का आरम्भ करें। आज के दिन से आरम्भ करके आषाढ़ शुक्ला एकादशी तक वसन्त राग में श्रीठाकुरजी का गुणानुवाद पूर्ण पदों का गान करें।
श्रीसनकादिको के वचन है – देवशयनी के पश्चात वसन्त राग ना गावें।
यह उत्सव पूर्वविद्धा ना करें परविद्धा ही करें।

भाष्यकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिवासाचार्यजी महाराज श्रीनिम्बार्क भगवान् के पट्टशिष्य हैं, आपका पाटोत्सव माघ शुक्ल पञ्चमी को मनाया जाता हैं। आपका निवास श्रीगोवर्धन के समीप श्रीराधाकुण्ड ललिता संगम पर श्रीनिवासाचार्यजी की बैठक के नाम से प्रसिद्द हैं। आपके पट्टशिष्य श्रीविश्वाचार्य जी ने आपको शंखावतार संबोधित कर प्रणाम किया हैं। आपने श्रीनिम्बार्क भगवान् द्वारा रचित ब्रह्मसूत्रों के भाष्य 'वेदान्त – पारिजात - सौरभ' के बृहद भाष्य 'वेदान्त कौस्तुभ' का निर्माण किया। आचार्य पंचायत में आप पांचवे क्रम पे सुशोभित हैं।
श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वर जाह्नवीकार   श्रीदेवाचार्यजी आचार्य परम्परा में 16 वें क्रम पर सुशोभित हैं। आपने ब्रह्मसूत्रों पर 'सिद्धान्त जाह्नवी' नामक अत्यन्त प्रौढ़ भाष्य लिखा, इससे आपका नाम 'जाह्नवीकार' के नाम से भी प्रसिद्द हैं। आपका पाटोत्सव माघ शुक्ल पञ्चमी को होता है।
गीतगोविन्दकार श्रीजयदेव कवि जयन्ती महोत्सव, माघ शुक्ल पञ्चमी को होता है।
श्रीरसिकदेव जी का प्राकट्योत्सव माघ शुक्ल पञ्चमी को होता है।
इस वर्ष वसन्तोत्सव तथा आचार्यों के पाटोत्सव पञ्चमी पूर्वविद्धा होने से प्र० षष्ठी – 17फरवरी 2020 को सम्पन्न होंगे

फाल्गुन मास

श्रीमहाशिवरात्री व्रत - फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी को श्रीनारायण स्वरुप से श्रीमहेश्वर का पूजन अर्चन करें। भगवान् श्रीशिव की पूजा भस्म-रुद्राक्ष माला के बिना नहीं हो सकती तथा वैष्णव को इनका निषेध हैं और शिवनिर्माल्य भी अग्राह्य है। अतः वैष्णव को श्रीशालिग्राम में भगवान् भूतभावन की भावना से परमवैष्णवाचार्य के रूप जानकार अर्चना करनी चाहिये।

होलिकापर्व – प्रदोष काल व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका दहन होता हैं। विष्णुपुराण के अनुसार असुर कुल में एक अद्भुत, प्रह्लाद नामक बालक का जन्म हुआ था। उनका पिता, असुर राज हिरण्यकश्यप देवताओं से वरदान प्राप्त कर के निरंकुश हो गया था। उसका आदेश था, कि उसके राज्य में कोई विष्णु की पूजा नही करेगा। परंतु प्रह्लाद श्रीविष्णु के भक्त थे और ईश्वर में उनकी अविचल आस्था थी। इस पर क्रोधित होकर हिरण्यकश्यप ने उन्हें मृत्यु दंड दिया। हिरण्यकश्यप की बहन, होलिका, जिस को आग से न मरने का वर था, प्रह्लाद जी को लेकर अग्नि में बैठ गई, परंतु श्रीभगवान् की कृपा से प्रह्लाद जी को कुछ न हुआ और वह स्वयं भस्म हो गई। इस ही अवसर की स्मृति में होली मनाई जाती हैं।

वसन्त डोल – फाल्गुन पूर्णिमा को कृष्णभक्त वैष्णव डोलोत्सव करें ऐसा श्रीसनकादिकों का आदेश हैं। फाल्गुन पूर्णिमा को डोल मण्डप सजावें, उसमें नवीन वस्त्रों सहित सिंहासन स्थापित करें। सब वस्त्रादिक श्वेत रंग के हों। आम के पत्तों की वन्दनवार, कदली स्तम्भ रोपण करें। छत्रचंवर ध्वजा पताका से सुशोभित कर श्रीयुगल सरकार को उसमें विराजित करें। गायन - वादन पूर्वक धीरे धीरे डोल झुलावें। केशर -आदि मिश्रित जल रंग-गुलाल श्रीभगवान् पर छिडकें और प्रसादी रूप उपस्थित वैष्णवों पर उल्लास से डालें। इस प्रकार आचार्यों के वाणी ग्रंथों के अनुसार अत्यन्त उत्साह पूर्वक यह होरी उत्सव मनावें।
श्रीअलिमाधुरी कुटी, बनबिहार की प्राचीन होरी लीला अत्यन्त प्रसिद्द हैं। पूर्वाचार्यों के वाणी ग्रन्थों के अनुरूप श्रीरासबिहारी सरकार का होरी लीलानुकरण प्राचीन मर्यादानुसार आयोजित होता है, जिसे श्रीधाम के रसिक जनों में बहुत मान प्राप्त है।

चैत्र मास कृष्ण पक्ष

चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को भी पूर्वोक्त रीति से डोल उत्सव करें।

श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को होता है। आपका जन्म विक्रम संवत 1916 में हुआ। विक्रम संवत 1963 में आप श्रीनिम्बार्काचार्य पीठासीन हुए तथा विक्रम संवत 2000 में आपका निकुंजवास हुआ। संयम नियम सदाचार पर आपका अत्यन्त आग्रह था। श्रीसर्वेश्वरार्चन, गायत्री मन्त्र तथा श्रीगोपालमंत्रराज जप, हवन और बलिवैश्वदेव आपके नित्य नियमों में प्रधान कर्म थे। श्रीसूर्यनारायण की ओर एकटक देखते हुए गायत्री मन्त्र का जाप आप किया करते थे। श्रीयुगल सरकार उनकी लीला तथा श्रीधाम में आपकी अनन्य निष्ठा थी।

चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रवर्तमान संवत की पूर्ति होती है।

श्रीसर्वेश्वरप्रपत्तिस्तोत्रम्

कृष्णं सर्वेश्वरं देवमस्माकं कुलदैवतम्।
मनसा शिरसा वाचा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥१॥
कारुण्यसिन्धुं स्वजनैकबन्धुं, कैशोरवेषं कमनीयकेशम्।
कालिन्दिकूले कृतरासगोष्टिं, सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥२॥
वेदैकगम्यं भुवनैकरम्यं विश्वस्य जन्मस्थितिभंगहेतुम्।
सर्वाधिवासं न परप्रकाशं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥३॥
राधाकलत्रं मनसापरत्रं हेयास्पृशं दिव्यगुणैकभूमिम्।
पद्माकरालालितपादपद्मं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥४॥
आभीरदारानयनाब्जकोषैः संवीर्चतास्यं निखिलैरुपास्यम्।
गोगोपगोपीभिरलंकृतांघ्रि, सर्वेश्वरं तं शरण प्रपद्ये ॥५॥
गोपालबालं सुरराजपालं रामाङ्कमालं शतपत्रमालम्।
वाद्यंरसालं विरजं विशालं, सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥६॥
आनंदसारं हृतभूमिभारं, कंशान्तकारं ह्यपिनिर्विकारम्।
कन्दर्पदर्पापिहरावतारं, सर्वेश्वरं तं शरण प्रपद्ये ॥७॥
विश्वात्मकं विश्वजनाभिरामं, ब्रह्मेन्द्र रुद्रैर्मनसा दुरापम्॥
भिन्नह्यभिन्नं जगतोहियस्मात्, सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥८॥
पीतांशुकं चारुविचित्रवेशं स्निग्धालकं कुञ्जविशालनेत्रम्॥
गोरोचनालं कृतभालनेत्रं, सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ॥९॥
वन्यैर्विचित्रैः कृतमौलिभूषणं, मुक्ताफलाढ्य झषराजकुण्डलं।
हेमांगदं हारकिरीटकौस्तुभं, मेघाभमानन्दमयं मनोहरम् ॥१०॥
सर्वेश्वरं सकललोकललाममाद्यं, देवं वरेण्यमनिशं स्वगतैर्दुरापम्।
वृन्दावनान्तर्गतैर्मृगपक्षिभृंगै-रीक्षापथागतमहं शरणं प्रपद्ये ॥११॥
हे सर्वज्ञ ! ऋतज्ञ ! सर्वशरण ! स्वानन्यरक्षापर !।
कारुण्याकर ! वीर ! आदिपुरुष ! श्रीकृष्ण ! गोपीपते! ॥
आर्तत्राण ! कृतज्ञ ! गोकुलपते ! नागेन्द्रपाशान्तक !।
दीनोद्धारक ! प्राणनाथ ! पतितं मां पाहि सर्वेश्वर ! ॥१२॥
हे नारायण ! नारसिंह ! नर ! हे लीलापते ! भूपते !।
पूर्णाचिन्त्यविचित्रशक्तिंकविभो ! श्रीश ! क्षमासागर !।
आनन्दामृतवारिधे ! वरद ! हे वात्सल्य रत्नाकर !।
त्वामाश्रित्य न कोऽपियाति जठरं तन्मां भवां तारय ॥१३॥
माता पिता गुरुरपीश ! हितोपदेष्टा, विद्याधनं स्वजनबन्धुरसुप्रियो मे।
धाता सखा पतिरशेषगतिस्त्वमेव, नान्यं स्मरामि तवपादसरोरुहाद्वै ॥१४॥
अहो दयालो ! स्वदयावशेन वै, प्रपश्य मां प्रापय पादसेवने।
यथा पुनर्मे विषयेषु माधव ! रतिर्न भूयाद्धि तथैव साधय ॥१५॥
श्रीमत्सर्वेश्वरस्यैतत्स्तोत्रं पापप्रणाशनम्। एतेन तुष्यतां श्रीमद्राधिका - प्राणवल्लभः ॥१६॥

इति श्रीमन्निम्बार्कपादपीठाधिरूढश्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्य विरचित-श्रीसर्वेश्वरप्रपत्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

"येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहश्चैकः क्रीड़ानार्थं द्विधाभूत्"

ठाकुरजी श्रीसरसबिहारी जी

****

पञ्चांग प्राप्ति स्थल

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी,
गढ़ के सामने, कलवाडा, तह० सांगानेर,
जि० जयपुर, राजस्थान – 302037

*****

श्रीअलिमाधुरी कुटी,
वनविहार,परिक्रमा मार्ग श्रीवृन्दावन, मथुरा (उ० प्र०) 281121

*****

श्रीगोपाल जी का मन्दिर,
जूसरी, मकराना जि० नागौर राजस्थान – 341505

****